“हमीरपुर जनपद में संचालित “जल जीवन मिशन” योजना के अंतर्गत “हर घर नल–हर घर जल” परियोजना के प्रभाव का अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्रस्तुत प्रतिवेदन”

सर्वेक्षक संस्था

समाज कार्य विभाग,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0प्र0)

सर्वेक्षक

डॉ0 यतीन्द्र मिश्र
विभागाध्यक्ष समाज कार्य विभाग एवं मुख्य सर्वेक्षक (परियोजना)

एवं

गठित टीम (सर्वेक्षक एवं शोध छात्र)
डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर, समाज विज्ञान संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

(सन् 2024)

विषय-सूची

क्रम	ग्राम/ग्राम पंचायत, वि०ख० एवं जनपद	पृष्ठ संख्या
1.	ग्राम हरौलीपुर, ग्राम पंचायत उमरहट, विकास खण्ड कुरारा, जनपद हमीरपुर	1-16
2.	ग्राम पंचायत पचखुरा, विकास खण्ड कुरारा, जनपद हमीरपुर	17-28
3.	ग्राम पंचायत बिलौटा, विकास खण्ड कुरारा, जनपद हमीरपुर	29-39
4.	ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर	40-53
5.	ग्राम हसऊपुर सेंसा, ग्राम पंचायत कुपरा, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर	54-65
6.	ग्राम धरऊपुर, ग्राम पंचायत जलालपुर, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर	66-77
7.	ग्राम जरिया टीला, ग्राम पंचायत मनकहरी, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर	78-90
8.	ग्राम पंचायत करगवाँ, विकास खण्ड गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर	91-101
9.	ग्राम टिकुर, ग्राम पंचायत लिंगा, विकास खण्ड गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर	102-113
10.	ग्राम पंचायत अतरा, विकास खण्ड गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर	114-126

प्रापक–

राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन,

नमामि गंगे तथा ग्रामीण जलापूर्ति विभाग,

किसान बाजार, विभूति खंड, गोमती नगर, लखनऊ।

प्रेषक–

विभागाध्यक्ष,

समाज कार्य विभाग,

बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी।

विषय– *''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना से बुंदेलखंड क्षेत्र के अंतर्गत हमीरपुर जनपद से चयनित कुल 10 ग्रामों के ग्रामवार प्रभाव आकलन का प्रतिवेदन।*

1.0 विषय परिचय

''जल जीवन मिशन'' माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार की महत्त्वाकांक्षी परियोजना है। यह परियोजना अगस्त 2019 में सर्वप्रथम गोवा राज्य से लागू की गई थी। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य 2024 तक प्रत्येक ग्रामीण परिवार को ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना है। इस योजना द्वारा भारत के प्रत्येक ग्रामीण परिवार में स्वच्छ जल की पहुंच सुनिश्चित करने हेतु नल का कनेक्शन दिये जाने तथा उस नल से प्रत्येक

परिवार के प्रति सदस्य को प्रतिदिन लगभग 55 लीटर स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है जिससे कि जल संकट के साथ ही स्वास्थ्य स्तर में भी सुधार किया जा सके।

2.0 साहित्य अवलोकन

किसी–भी राष्ट्र में स्वस्थ एवं कुशल मानव संसाधन के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि उस राष्ट्र में निवास करने वाले लोग निरोग एवं स्वस्थ हों। स्वस्थ मानव संसाधन के निर्माण में संतुलित आहार एवं स्वच्छ जल की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का विकास होता है। इसलिए सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति, जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य सम्मिलित है, की कल्पना स्वच्छ पेयजल के अभाव में नहीं की जा सकती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–21 के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार भारत के प्रत्येक नागरिक को प्राप्त है। इसमें स्वच्छ पेयजल का अधिकार भी एक मौलिक अधिकार के रूप में समाहित है। इसलिए सरकार का दायित्त्व है कि वह वंचित ग्रामीण आबादी तक स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करे, ताकि उनके जीवन स्तर में सुधारात्मक बदलावों को प्रेरित किया जा सके। यदि उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र की बात की जाये, तो यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही जल संकट का सामना करता रहा है। यहां पर औसत वार्षिक वर्षा बहुत कम होती है। यहां अधिकांश वर्षा दक्षिण–पश्चिम मानसून द्वारा जुलाई से सितंबर माह के मध्य होती है। पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र होने के कारण भूजल स्तर बहुत नीचे है। जल संकट ने यहां के जीवन को दुष्कर बनाया हुआ है। पर्याप्त एवं शुद्ध जल की कमी ने यहां के लोगों के समक्ष गंभीर जल संकट उत्पन्न किया है जिसका समाधान नितांत आवश्यक है। इसके समाधान

के लिए भारत सरकार द्वारा ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घल नल–हर घर जल'' परियोजना संचालित की जा रही है, ताकि जल संकट के समाधान के साथ–साथ आरोग्य की प्राप्ति एवं सामाजिक विकास के बहु–आयामी लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

3.0 प्रभाव आकलन का उद्देश्य

1. ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत हमीरपुर जनपद के विकास खण्ड कुरारा के ग्राम पंचायत उमरहट में अवस्थित ग्राम हरौलीपुर में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव का आकलन।
2. ''हर घल नल–हर घर जल'' योजना क्रियान्वयन द्वारा ग्राम हरौलीपुर में निवासित ग्रामीण जन के सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य एवं सामाजिक व्यवहार में बदलाव की स्थिति का अध्ययन।

4.0 प्रभाव आकलन की उपकल्पना

1. राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित योजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा ग्राम हरौलीपुर, ग्राम पंचायत उमरहट, विकास खण्ड कुरारा, जनपद हमीरपुर में कृत कार्य से लोगों के जीवन स्तर में बदलाव आया है
2. ग्राम हरौलीपुर में निवासित आबादी के स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है।
3. परियोजना के संचालन से ग्रामीण जन के सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्थितियों में बदलाव हुआ है।

4. परियोजना के संचालन से सामाजिक मनोवृत्ति एवं सामाजिक व्यवहार में बदलाव आया है।

5.0 अध्ययन की प्रणाली एवं उपकरण

अध्ययन हेतु शोध की निम्न तकनीकि एवं उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. अवलोकन
2. सहभागी मूल्यांकन

ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए सरकार द्वारा संचालित ‘‘जल जीवन मिशन’’ योजना के अंतर्गत ‘‘हर घर नल–हर घर जल’’ परियोजना का ग्राम हरौलीपुर, ग्राम पंचायत उमरहट, विकास खण्ड कुरारा, जनपद हमीरपुर में निवासित आबादी के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। ग्राम हरौलीपुर, ग्राम पंचायत उमरहट की कुल आबादी–800 है एवं कुल परिवारों की संख्या–60 तथा मतदाताओं की संख्या–450 है। ग्राम हरौलीपुर में नल कनेक्शन स्कोप–207 है जिसके सापेक्ष केवल 153 नल कनेक्शन दिये गये हैं। शहरों में कुछ परिवारों के पलायन कर जाने के कारण उन्हें नल कनेक्शन की आवश्कता नहीं है। इसलिए कुल 153 किये गये नल कनेक्शन ग्राम के सभी परिवारों को आच्छादित करते हैं। ग्राम में निवासित सभी परिवारों को ‘‘हर घर नल–हर घर जल’’ योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। ग्राम में लगभग 600 बीघा जमीन है जिसमें से लगभग 500 बीघा जमीन उपजाऊ एवं 100 बीघा जमीन ऊबड़–खाबड़ तथा अनुपजाऊ है। ग्राम हरौलीपुर में निवासित लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत

कृषि है। कुछ लोग दिहाड़ी–मजदूरी करके भी जीवन–यापन कर रहे हैं। कृषि से लगभग 80 प्रतिशत एवं मजदूरी से लगभग 20 प्रतिशत लोग आय प्राप्त करते हैं। ग्राम में बहुसंख्यक आबादी ब्राह्मण जाति के लोगों की है।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम हरौलीपुर की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों

की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती अर्चना शुक्ला से ग्राम हरौलीपुर की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके हरौलीपुर ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों के संदर्भ

में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम हरौलीपुर में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। हितधारकों एवं न्यादर्शों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम हरौलीपुर में एक प्राथमिक एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय संचालित है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री जितेन्द्र कुमार से हुई परिचर्चा के आधार पर प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में कुल स्टॉफ की संख्या–02 है एवं विद्यालय में कुल 32 विद्यार्थी नामांकित हैं। उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में कुल 115 विद्यार्थी नामांकित हैं एवं विद्यालय में कुल स्टॉफ की संख्या–06 है। उक्त विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हैं तथा विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त कर दिया गया है जिसके कारण नियमित रूप से बच्चों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो रहा है।

6.0 निदर्श निर्धारण

प्रस्तुत अध्ययन में निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम हरौलीपुर की कुल जनसंख्या–800 है। कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार 800/10 = 80 न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें महिलाओं एवं पुरूषों की समान भागीदारी सुनिश्चित की गयी है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित इकाइयों के अतिरिक्त ग्राम हरौलीपुर से संबद्ध हितधारकों से भी चर्चा करके अपेक्षित आंकड़े प्राप्त किये गये हैं।

7.0 समाविष्ट के मानदण्ड

सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम हरौलीपुर की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

8.0 बहिष्करण के मानदण्ड

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम हरौलीपुर से सम्बद्ध नहीं था।

9.0 अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार अध्ययन से प्राप्त परिणाम

ग्राम हरौलीपुर, ग्राम पंचायत उमरहट, विकास खण्ड कुरारा, जनपद हमीरपुर का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम हरौलीपुर में निवासित लोगों के जीवन स्तर में बदलाव लाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम निम्नलिखित हैं–

9.1 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना एवं सामाजिक परिवर्तन

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित प्रस्तुत शोध के इस खण्ड के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस हेतु न्यादर्श में सम्मिलित कुल 40 महिला उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। अध्ययनकर्ता द्वारा न्यादर्श में सम्मिलित प्रत्येक महिला उत्तरदाता से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करते हुये अध्ययन उद्देश्यों के अनुरूप उनसे

आंकड़ों को संकलित करते हुए आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। ''हर घर नल–हर घर

जल'' योजना एवं सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में संपन्न अध्ययन का परिणाम निम्नलिखित है–

- अध्ययन में सम्मिलित 98 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से जल जनित बीमारियों में कमी आयी है।
- 95 प्रतिशत अध्ययन में सम्मिलित इकाइयों ने बताया कि स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण पाचन शक्ति में सुधार आया है जिससे पेट में ऐंठन एवं गैस की समस्या से छुटकारा मिला है।

- 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा जल संकट के समाधान के साथ ही स्वच्छ पेयजल भी उपलब्ध हुआ है।
- 98 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि वर्णित योजना के कारण समय एवं धन की बचत होन के साथ ही ग्राम में निवासित महिलाओं के समग्र स्वास्थ्य में सुधार आया है।
- 93 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से बंद पड़े शौचालय फिर से क्रियात्मक हो गये हैं जिससे महिलाओं के सम्मान एवं सुरक्षा में वृद्धि हुई है।
- 98 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों ने बताया कि इलाज हेतु डॉक्टर को अनावश्यक पैसे देने से मुक्ति मिली है।
- 97 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि वह पूर्व की अपेक्षा वर्णित योजना के लागू होने से बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर अधिक समय दे रही हैं जिससे परिवार में उनका सम्मान बढ़ा है।
- 92 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं के अनुसार स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण कृषि एवं पशुपालन में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है क्योंकि अब मनुष्यों के साथ–साथ पशुओं को भी स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है।
- 91 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार उनकी सोच में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण आधुनिक मूल्यों का समावेश हुआ है क्योंकि स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण उनका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सुधरा है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस तथ्य की ओर इंगित करते हैं कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने महिला सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने के साथ ही महिलाओं के जीवन में समग्र परिवर्तन लाते हुए उन्हें एक सम्मानजनक जीवन स्तर प्रदान किया है। वर्णित योजना महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति में सुधार करते हुए उन्हें खुशहाल जीवन जीने का अवसर उपलब्ध कराया है।

9.2 "हर घर नल–हर घर जल" योजना द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में आये बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में आये बदलावों को जानने के लिए कुल 80 न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों के

आधार पर हरौलीपुर ग्राम में वर्णित योजना द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में आये बदलावों के संबंध में निष्कर्ष निकाले गये हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 98 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि वर्णित योजना के संचालन से प्राप्त स्वच्छ जल से लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्थिति में आये सुधारों के कारण ग्राम हरौलीपुर में निवासित लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि इलाज पर होने वाले धन की बचत के कारण बच्चों की शिक्षा पर धन का निवेश बढ़ा है जिसके कारण गांव के कुछ बच्चों को इंग्लिश मीडियम के निजी विद्यालयों में भी अध्ययन हेतु भेजा जा रहा है। 98 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया कि बच्चों को घर पर अन्य कार्यों की अपेक्षा अध्ययन पर अधिक समय व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। ग्राम हरौलीपुर में एक प्राथमिक एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से हुई परिचर्चा में पता चला कि विद्यालय में बच्चों के नामांकन दर में वृद्धि हुई है तथा ड्राप आउट की दर में कमी आयी है। प्रधानाचार्य ने बताया कि अभिभावकों में पूर्व की अपेक्षा बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है लेकिन अभी–भी इसमें और जागरूकता लाने की आवश्यकता है। उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि विद्यालय में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण बच्चों के नामांकन एवं उपस्थिति दर में वृद्धि हुई है जिसके कारण शिक्षकों द्वारा बेहतर शिक्षा बच्चों को देने का प्रयास किया जा रहा है। प्रधानाचार्य ने बताया कि बालिकाओं की नियमित उपस्थिति वर्णित योजना के कारण विद्यालय में बढ़ी है क्योंकि अब उनका स्वास्थ्य ठीक रहता है तथा जल संग्रह पर उनका समय अनावश्यक रूप से व्यय नहीं होता है, इसके अतिरिक्त अभिभावकों में आयी जागरूकता के कारण भी बालिकों की शिक्षा को प्राथमिकता दिया जा रहा है।

9.3 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना एवं स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

इस खण्ड के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा हरौलीपुर ग्राम में निवासित आबादी के स्वास्थ्य स्तर में आये बदलावों का अध्ययन अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर किया गया है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम स्वास्थ्य के क्षेत्र में आमूल–चूल परिवर्तन को दर्शाते हैं। कुल 80 न्यादर्शों से प्राप्त परिणाम इस प्रकार हैं–

न्यादर्श में सम्मिलित 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के कारण उनके समग्र स्वास्थ्य में सुधार आया है। वह शारीरिक एवं मानसिक

रूप से स्वस्थ महसूस करते हैं। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के कारण

पेट दर्द संबंधी बीमारियों में कमी आयी है साथ ही जल जनित बीमारियों जैसे– डायरिया, पेचिस, दस्त, पोलियो आदि बीमारियों में भी कमी देखी गयी है। 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि खाज–खुजली जैसे चर्म रोगों से भी सुरक्षा प्राप्त हुई है क्योंकि पूर्व में एक तो दूषित पेयजल पर निर्भरता अधिक थी और दूसरी जल संकट के कारण पर्याप्त जल उपलब्ध ना होने के कारण नियमित रूप से स्नान करना संभव नहीं था। 97 प्रतिशत न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ें इस तथ्य की ओर इंगित करते हैं कि स्वच्छ पेयजल के कारण पाचन क्रिया में सुधार आया है जिसके कारण भोजन ठीक से पचता है, परिणामस्वरूप पेट में गैस की समस्या में कमी देखी गयी है।

अतएव उक्त के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि वर्णित योजना के कारण ग्राम हरौलीपुर, ग्राम पंचायत उमरहट में निवासित आबादी के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है जिसकी पुष्टि न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से प्राप्त आंकड़े करते हैं।

9.4 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार में आये बदलाव

शिक्षा, स्वास्थ्य एवं महिलाओं की प्रस्थिति में बदलाव के साथ ही वर्णित योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार में भी बदलावों को प्रेरित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व गांव के केवल समृद्ध एवं उच्च जातियों के लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता थी, अन्य लोगों को कुओं एवं तालाबों तथा टैंकर द्वारा प्राप्त होने वाले जल पर निर्भर रहना पड़ता था, जो कि सामान्यतः दूषित जल होता था। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के लागू होने के बाद से कुछ परिवारों को छोड़कर सभी परिवारों को नल कनेक्शन उपलब्ध करा दिया गया है जिससे स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप

से की जा रही है। ग्राम हरौलीपुर से संबद्ध हितधारकों एवं न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से परिचर्चा में पाया गया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालन के पूर्व जल संकट के कारण जल की प्राप्ति के लिए प्रायः लड़ाई–झगड़े हुआ करते थे, क्योंकि लोगों को नल एवं टैंकर से पानी लेने के लिए लंबी लाइनों में लगना पड़ता था। चूंकि अब जल संकट का समाधान होने के साथ ही स्वच्छ पेयजल भी उपलब्ध हुआ है जिसके कारण होने वाले झगड़ों में विराम

लगा है, साथ ही गांव की सामाजिक एकता सुदृढ़ हुई है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के कारण जरूरत पड़ने पर लोग एक–दूसरे की मदद भी करते हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा समभाव की भावना का भी विकास हुआ है। 91 प्रतिशत

उत्तरदाताओं ने बताया कि लोगों के जीवन स्तर में सुधार एवं सोच में आधुनिक मूल्यों के समावेश के कारण शादी–विवाह में भी परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं जिसकी पुष्टि विवाह एवं अन्य सामाजिक समारोहों पर होने वाले खर्च की अधिकता से होती है। 90 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि बाल विवाह में कमी देखी गई है क्योंकि वह उसके दुष्परिणामों के प्रति जागरूक हुए हैं।

9.5 ‘‘हर घर नल–हर घर जल‘‘ योजना एवं रोजगार के अवसर

हितधारकों एवं न्यादर्शों से प्राप्त जानकारी के अनुसार हरौलीपुर गांव की अधिकांश आबादी कृषि से प्राप्त आय पर जीवन निर्वाह करती है। कुछ लोग दिहाड़ी–मजदूरी करके तथा

कुछ लोग बाहर नगरों एवं महानगरों में रहकर जीवकोपार्जन कर रहे हैं। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण स्व–रोजगार पर अधिक समय दिया जा रहा है। 86 प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं ने बताया कि गांव में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण उनका लगाव अपने गांव के प्रति बढ़ा है। इन युवाओं ने बताया कि वह गांव में ही रहकर छोटे–मोटे रोजगार करके अपना जीवन यापन करेंगे क्योंकि शहरों में 8–10 हजार रूपये प्रति माह देकर 10–12 घण्टे काम लिया जाता है, वो भी बहुत मेहनत वाला एवं स्वास्थ्य के प्रतिकूल परिस्थितियों में। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि युवाओं के पलायन दर में वर्णित योजना द्वारा कमी आयी है। अवलोकन में पता चला कि युवाओं में मुर्गी पालन एवं सब्जी उत्पादन के प्रति उत्साह बढ़ा है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त जानकारी के अनुसार महिलाओं द्वारा सिलाई–कढ़ाई एवं पशुपालन जैसे कार्यों में अधिक समय दिया जा रहा है क्योंकि अब उनका स्वास्थ्य भी अच्छा है और उनके पास पर्याप्त समय भी उपलब्ध है। अतः स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के उपलब्ध विविध विकल्पों का प्रयोग करने के प्रति युवाओं में उत्साह आया है।

उपर्युक्त विभिन्न आयामों के आधार पर न्यादर्शों एवं हितधारकों से प्राप्त आंकड़े पुष्टि करते हैं कि ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में बहुत हद तक सफल रही है। योजना द्वारा कृत कार्य से महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक व्यवहार एवं रोजगार के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव आये हैं। वर्णित योजना हरौलीपुर ग्राम में निवासित लोगों के सर्वांगीण विकास में मददगार सिद्ध हुई है।

ग्राम पंचायत पचखुरा, विकास खण्ड कुरारा, जनपद हमीरपुर

सरकार द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का पचखुरा ग्राम पंचायत में निवासित आबादी के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम पंचायत पचखुरा की जनसंख्या, परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त नल संयोजनों की

संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री अरविन्द कुमार से ग्राम पंचायत पचखुरा के संदर्भ में परिचर्चा किया गया। ग्राम प्रधान के अतिरिक्त ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके ग्राम की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। साथ ही ग्राम पंचायत में संचालित एक प्राथमिक विद्यालय एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, नल संयोजन आदि की जानकारी प्राप्त की गई।

पचखुरा ग्राम पंचायत की कुल आबादी–800 है एवं कुल परिवारों की संख्या–300 तथा मतदाताओं की संख्या–456 है। ग्राम पंचायत पचखुरा में नल संयोजन स्कोप–378 है जिसके सापेक्ष 285 नल कनेक्शन दिये जा चुके हैं। जो परिवार गांव से बाहर शहरों रहते हैं अथवा नल कनेक्शन लेने के इच्छुक नहीं हैं, उन्हें छोड़कर सभी परिवारों को नल संयोजन संतृप्त कर दिया गया है। ग्राम पंचायत में कुल खेती योग्य जमीन 300 बीघा है, जिसकी सिंचाई ट्यूबेल द्वारा की जाती है। लगभग 80 प्रतिशत लोगों की आजीविका कृषि एवं 20 प्रतिशत लोगों की आजीविका दिहाड़ी–मजदूरी पर आधारित है। न्यादर्शों एवं हितधारकों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित है जिसकी सहायिकाओं का नाम श्रीमती रागिनी एवं बबली देवी है। ग्राम पंचायत में यादव जाति के लोग बहुसंख्यक हैं। गांव में कोई–भी स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है।

प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों से प्राप्त जानकारी के अनुसार उक्त दोनों विद्यालयों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त किया जा चुका है जिससे

बच्चों को नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। प्राथमिक विद्यालय में कुल छात्र/छात्रा नामांकन–33 एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय में कुल छात्र/छात्रा नामांकन–53 है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

पचखुरा ग्राम पंचायत की कुल आबादी–800 है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। पचखुरा ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (800/10 = 80)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 80 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि पचखुरा ग्राम पंचायत के निवासी हैं, सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव को जाना गया है। साथ ही योजना द्वारा ग्राम पंचायत में निवासित लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में पचखुरा ग्राम पंचायत से संबद्ध हितधारकों से भी चर्चा किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

पचखुरा ग्राम पंचायत में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम पंचायत की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम पंचायत के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध लोग सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो पचखुरा ग्राम पंचायत से सम्बद्ध नहीं था।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम पंचायत पचखुरा का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम पंचायत पचखुरा में निवासित लोगों के जीवन स्तर को उच्च करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से पचखुरा ग्राम पंचायत में निवासित लोगों के जीवन स्तर में हुए परिवर्तनों का वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से वर्णन किया गया है, जो निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

इसके अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का अध्ययन किया गया है। कुल 40 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर इस खण्ड का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में सम्मिलित 97 प्रतिशत महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पश्चात् उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने के कारण इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है क्योंकि अब उन्हें अनेक प्रकार की बीमारियों से छुटकारा मिल गया है। 98 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि पूर्व में बहुत दूर से पेयजल भरकर लाना

पड़ता था जिसके कारण कमर एवं कंधे में प्रायः दर्द बना रहता था। 92 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि कुछ महिलाओं को डॉक्टर द्वारा बोझा उठाने की मनाही थी जिसके कारण पेयजल लाना उनके लिए बहुत दुष्कर हो जाता था। बीमारी की दशा एवं गर्भवती महिलाओं को पेयजल

का संग्रह कर पाना और कठिन हो जाता था। 95 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि जल संग्रह

पर कम समय लगने एवं स्वास्थ्य स्तर अच्छा होने के कारण वह बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दे पाती हैं। 97 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि समय बचत होने के कारण वह बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर पूर्व की अपेक्षा अधिक समय व्यतीत कर रही हैं, जिसके कारण परिवार में उनकी भूमिका बढ़ गयी है, परिणामस्वरूप परिवार में उनके सम्मान में बढ़ोत्तरी हुई है। 94 प्रतिशत महिला न्यादर्शों के अनुसार समय एवं धन की बचत से सिलाई–कढ़ाई जैसे कार्यों में महिलाओं द्वारा अधिक समय दिया जा रहा है। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है और परिवार में उनकी भूमिका में बढ़ोत्तरी हुई है। वर्णित योजना महिलाओं का समग्र विकास करने में सक्षम हुई है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम पंचायत पचखुरा में एक प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय अवस्थित है। उक्त दोनों विद्यालयों के प्रधानाचार्य से परिचर्चा करने पर पता चला कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से बच्चों के नामांकन संख्या में वृद्धि एवं ड्राप आउट की समस्या में कमी आयी है। पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री संतराम दिवाकर के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजा जा रहा है, बच्चों की बोध क्षमता में वृद्धि हुई है तथा बच्चों की ड्राप आउट की दर में कमी आयी है। उक्त दोनों विद्यालयों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त कर दिया गया है जिसके कारण विद्यालय में बने शौचालय पूर्ण रूप से क्रियात्मक हो गये हैं, परिणामस्वरूप बालिकाओं के नामांकन दर में बालकों की अपेक्षा अधिक वृद्धि हुई है। 97 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल''

योजना लागू होने के बाद से अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है और वह बच्चों की शिक्षा पर पूर्व की अपेक्षा अधिक ध्यान दे रहे हैं। 57 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित लोगों ने कहा कि गांव के सभी बच्चे अब नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं। अध्ययनकर्ता द्वारा

अवलोकन में पता चला कि ग्राम पंचायत पचखुरा में निवासित लोगों की साक्षरता दर में अधिक सुधार हुआ है, लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने स्वास्थ्य में सुधार करने के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधारों को प्रेरित किया है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से पेट दर्द की समस्या से छुटकारा मिल गया है क्योंकि पूर्व में दूषित

जल पीने के कारण प्रायः पेट दर्द की समस्या बनी रहती थी, जिससे निजात मिल गया है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनका स्वास्थ्य ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से उन्नत हुआ है जिससे उनकी कार्य क्षमता में सुधार परिलक्षित हुआ है। अध्ययन में सम्मिलित 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने कहा कि अब पेचिस, दस्त एवं पीलिया जैसी जल

जनित बीमारियों का शमन वर्णित योजना के कारण हुआ है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार उनके शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक स्वास्थ्य में सुधार आया है। अध्ययनकर्ता द्वारा किये गये अवलोकन में पाया गया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने पचखुरा ग्राम पंचायत में निवासित सभी लोगों के स्वास्थ्य को उन्नत किया है, जिसके कारण वह खुशहाल जीवन जी रहे हैं। महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने के कारण परिवार में शांति एवं खुशहाली आयी है एवं महिलाओं की भूमिका परिवार में बढ़ी है, जो उन्हें सम्मानजनक प्रस्थिति प्रदान करती है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से पूर्व ग्राम पंचायत पचखुरा में निवासित समृद्ध एवं उच्च जातियों के लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित थी, निम्न जाति एवं आय वर्ग के लोगों को दूषित पेयजल का ही उपयोग मजबूरी में करना पड़ना पड़ता था, जिसके लिए वह कुओं एवं तालाबों में उपलब्ध जल का प्रयोग अपने दैनिक उपभोग में करते थे। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की 100 प्रतिशत इकाइयों ने स्वीकार किया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम पंचायत पचखुरा के प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है, अब उन्हें दूषित पेयजल से छुटकारा मिल गया है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के संचालन से ग्राम पंचायत पचखुरा में अपनेपन एवं सहकार तथा सहयोग की भावना का विकास हुआ है। लोगों में एकता की भावना आयी है, लड़ाई–झगड़ों में कमी आयी है। शादी–विवाह के संबंध में न्यादर्श की इकाइयों से परिचर्चा में पता चला कि 91 प्रतिशत उत्तरदाता स्वीकार करते हैं कि बाल विवाह में कमी आयी है क्योंकि लोगों में शिक्षा एवं

जागरूकता आने के कारण बाल विवाह के दुष्परिणामों के प्रति चेतना उत्पन्न हुई है। अतएव यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने जल संकट के समाधान के

साथ ही सामाजिक एकता, शांति एवं बाल विवाह जैसी कुरीतियों का समाधान प्रस्तुत किया है। परिणामस्वरूप लोगों के जीवन स्तर में सुधार दृष्टिगोचर हो रहा है।

4.5 रोजगार के अवसर

ग्राम पंचायत पचखुरा में लगभग 80 प्रतिशत लोग कृषि कार्यों में संलग्न हैं। कुछ लोग शहरों में जीवकोपार्जन हेतु चले गये हैं। वहीं कुछ लोग दिहाड़ी–मजदूरी करके जीवन–यापन

कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से सभी परिवारों तक शुद्ध पेयजल की पहुंच

सुनिश्चित हुई है जिसके कारण लोगों के समय एवं धन की बचत होने के साथ ही स्वास्थ्य स्तर में भी सुधार आया है। परिणामस्वरूप लोगों के समक्ष रोजगार के नये अवसर उपलब्ध हुये हैं। धन की बचत होने के कारण लोगों द्वारा स्व–रोजगार में धन का निवेश अधिक किया जा रहा है। कृषि एवं पशुपालन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालन के बाद से वृद्धि देखी गयी है। 92 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी

बढ़ी है। 93 प्रतिशत महिलाओं के बताया कि अब महिलायें अपने बचे हुए समय का प्रयोग उत्पादक एवं आय अर्जक कार्यों में कर रही हैं। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के संचालन के पश्चात् से युवाओं के पलायन दर में कमी आयी है। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवाओं में स्वरोजगार के प्रति चेतना का विकास हुआ है। अवलोकन एवं युवाओं से परिचर्चा में पता चला कि युवाओं का झुकाव मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन, मधुमक्खी पालन, सब्जी उत्पादन आदि के प्रति बढ़ा है। यदि उन्हें समुचित अवसर प्राप्त हो, तो वह गांव में ही उक्त रोजगार करना पसंद करते हैं। इस प्रकार से यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने युवाओं में अपने गांव के प्रति लगाव को उत्पन्न किया है जिसके कारण वह गांव मे ही रहकर आजीविका के विकल्पों को खोजने हेतु प्रयत्नशील हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन से यह तथ्य प्राप्त होता है कि राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित योजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, उसके प्राप्ति की पुष्टि ग्राम पंचायत पचखुरा, विकास खंड कुरारा, जनपद हमीरपुर का टीम सर्वेक्षण एवं अध्ययन के पश्चात प्राप्त आंकड़ों द्वारा होता है। सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य करते हुए पचखुरा ग्राम पंचायत के लोगों के जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव ला रही है। यह योजना स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक व्यवहार एवं रोजगार आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देकर लोगों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित कर रही है। ग्राम में निवासित जनता समग्र परिवर्तन को महसूस कर रही है जिससे उनमें खुशहाली आयी है।

ग्राम पंचायत बिलौटा, विकास खण्ड कुरारा, जनपद हमीरपुर

''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का बिलौटा ग्राम पंचायत में निवासित आबादी के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम पंचायत बिलौटा की जनसंख्या, परिवारों

की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र

के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती रामरती से ग्राम पंचायत बिलौटा के संदर्भ में परिचर्चा करके अपेक्षित जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम प्रधान के अतिरिक्त ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में आंकड़ों को एकत्र किया गया। साथ ही ग्राम पंचायत में संचालित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, नल संयोजन आदि की जानकारी प्राप्त की गई।

बिलौटा ग्राम पंचायत की कुल आबादी–2000 है एवं कुल परिवारों की संख्या–550 तथा मतदाताओं की संख्या–1700 है। ग्राम पंचायत बिलौटा में नल संयोजन स्कोप–508 है जिसके सापेक्ष 429 नल कनेक्शन दिये गये हैं। ग्राम में निवासित प्रत्येक परिवार को वर्णित योजना से आच्छादित किया जा चुका है, केवल वही परिवार नल संयोजन से वंचित हैं, जो शहरों में जीवकोपार्जन हेतु पलायन कर गये हैं अथवा वह नल कनेक्शन लेने के इच्छुक नहीं हैं। ग्राम पंचायत में कुल खेती योग्य जमीन 700 बीघा है, जिसमें कृषि कार्य किया जाता है। ग्राम पंचायत के लगभग 90 प्रतिशत लोगों की आजीविका कृषि एवं 10 प्रतिशत लोगों की आजीविका दिहाड़ी–मजदूरी पर आधारित है। न्यादर्शों एवं हितधारकों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित है जिसकी सहायिकाओं का नाम श्रीमती कृष्ण कांति एवं शिवकांती है। ग्राम पंचायत में कोई–भी स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है।

प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त किया जा चुका है जिससे बच्चों को नियमित रूप से

स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य सौरभ यादव के अनुसार विद्यालय में कुल नामांकन–33 है जिसमें 16 बालक एवं 17 बालिकाएं हैं।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

बिलौटा ग्राम पंचायत की कुल आबादी–2000 है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। बिलौटा ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (2000/10 = 200)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 80 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि बिलौटा ग्राम पंचायत के निवासी हैं, सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव को जाना गया। साथ ही योजना द्वारा ग्राम पंचायत में निवासित लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में बिलौटा ग्राम पंचायत से संबद्ध हितधारकों से भी चर्चा किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

बिलौटा ग्राम पंचायत में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम पंचायत की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम पंचायत के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध लोग सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि बिलौटा ग्राम पंचायत से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम पंचायत बिलौटा का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम पंचायत बिलौटा में निवासित लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलावों को प्रेरित किया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से बिलौटा ग्राम पंचायत में निवासित लोगों के जीवन स्तर में हुए परिवर्तनों का वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से वर्णन किया गया है, जो कि निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

इसके खण्ड के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं के जीवन स्तर में आये परिवर्तन का अध्ययन किया गया है। कुल 100 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर इस खण्ड का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। 100 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। 98 प्रतिशत के अनुसार अब दूषित जल पीने से मुक्ति मिल गई है। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है।

97 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार बीमारियों में कमी आने से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी

आयी है जिससे धन की बचत हुई है। 95 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि समय एवं धन की बचत होने के कारण बच्चों की शिक्षा पर, वह पूर्व की अपेक्षा अधिक ध्यान दे रही हैं। 96 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर वह पूर्व की अपेक्षा अधिक समय दे रही हैं। 92 प्रतिशत के अनुसार श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी हैं। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं का समग्र

विकास संभव हुआ है। वर्णित योजना का उल्लेखनीय प्रभाव महिलाओं के जीवन स्तर पर पड़ रहा है जिससे उनमें खुशहाली आयी है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम पंचायत बिलौटा, विकास खण्ड कुरारा में स्थित प्राथमिक विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त किया जा चुका है। प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से प्राप्त

जानकारी के अनुसार वर्णित योजना के संचालन के पश्चात् से विद्यालय में बच्चों के नामांकन में वृद्धि एवं ड्राप आउट की दर में कमी आयी है। प्रधानाचार्य ने बताया कि विद्यालय में निर्मित

शौचालय वर्णित योजना के संचालन के बाद से नियमित जलापूर्ति के कारण पूर्ण रूप से उपयोग किये जा रहे हैं, जिसके कारण मूलभूत सुविधाओं की उपस्थिति के साथ ही बच्चों में स्वच्छता भी आयी है, प्रत्येक परिवार को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से आच्छादित करने के कारण बच्चे नियमित रूप से स्नान करके विद्यालय आते हैं जिसका प्रभाव बच्चों के सीखने की क्षमता पर पड़ता है। 96 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से बच्चों की शिक्षा पर धन का अधिक निवेश किया जा रहा है क्योंकि इलाज पर होने वाले खर्च की बचत हुई है और शिक्षा के प्रति जागरूकता भी लोगों में आयी है। न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से चर्चा करने पर 94 प्रतिशत ने बताया कि वह ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से बेटे की शिक्षा पर जितना ध्यान दे रहे हैं, उतना ही ध्यान बेटियों की शिक्षा पर भी दे रहे हैं। इसका अर्थ है कि ग्राम पंचायत बिलौटा में बेटियों को भी शिक्षित करके उनके भविष्य को सँवारा जा रहा है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता का सृजन हुआ है। वह अपने बच्चों को पढ़ा–लिखा कर एक सभ्य एवं विकसित समाज के निर्माण के प्रति चिंतित हैं।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वास्थ्य संबंधी बदलावो के संदर्भ में चर्चा करने पर 100 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों ने कहा कि योजना के संचालन के बाद से उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है। न्यादर्श की सभी इकाइयों ने बताया कि वर्णित योजना के लागू होने के बाद से पेट दर्द एवं जल जनित बीमारियों में कमी आयी है। 100 प्रतिशत इकाइयों ने स्वीकार किया कि अब समय एवं धन की बचत हुई है, क्योंकि ''हर घर नल–हर

घर जल'' योजना लागू होने के पूर्व दूषित जल से होने वाली बीमारियों के इलाज पर ही अधिकतर पैसे बर्बाद हो जाते थे। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके शारीरिक एवं

मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है जिससे उनकी कार्य क्षमता में वृद्धि हुई है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होने के कारण वह नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं और पढ़ाई–लिखाई में उनका मन भी अच्छे से लग रहा है। कुल मिलाकर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम पंचायत बिलौटा में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय बदलाव आया है। लोगों में जागरूकता आने के कारण बच्चों की शिक्षा में सुधार देखा जा सकता है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से पूर्व ग्राम पंचायत बिलौटा में समृद्ध एवं उच्च जातियों को ही स्वच्छ

पेयजल उपलब्ध हो पाता था, निम्न जाति एवं आय वर्ग के लोगों को दूषित पेयजल से ही काम चलाना पड़ता था जिसके कारण दूषित पेयजल का उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था। 99 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालित होने के बाद से प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार वर्णित योजना के संचालन के बाद से ग्राम पंचायत बिलौटा में सामाजिक एकता उत्पन्न हुई है, लोगों में अपनेपन का भाव जागृत हुआ है। उत्तरदाताओं से शादी–विवाह

के संबंध में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव के संदर्भ में चर्चा करने पर पता चला कि वर्णित योजना का विशेष प्रभाव शादी–विवाह पर नहीं पड़ा है, यद्यपि कि अवलोकन में यह देखने को मिला कि बाल विवाह एवं दहेज की समस्या में कमी आयी है तथा लोग शिक्षित लड़के/लड़कियों को अधिक पसंद कर रहे हैं।

4.5 रोजगार के अवसर

उत्तरदाताओं एवं हितधारकों से परिचर्चा में पता चला कि ग्राम पंचायत बिलौटा की अधिकांश आबादी कृषि कार्यों में संलग्न हैं, कुछ लोग शहरों में जीवकोपार्जन हेतु पलायन कर

गये हैं, वहीं कुछ लोग आस–पास के गांव में दिहाड़ी–मजदूरी करके जीवन–यापन कर रहे हैं।

100 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा जल संकट के समाधान के साथ ही प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हुआ है जिसके कारण युवाओं में अपने गांव के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति उत्पन्न हुई है, परिणामस्वरूप युवाओं में पलायन दर में कमी आयी है। 93 प्रतिशत युवाओं से परिचर्चा में पता चला कि वह गांव में ही रहकर स्वरोजगार करके अपनी जीविका चलाना पसंद करते हैं। युवाओं ने बताया कि गांव में लगभग सभी मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हो गयी हैं, इसलिए वह गांव में ही स्व–रोजगार जैसे– किराना की दूकान, मोबाइल रिपेयरिंग की दूकान, सब्जी बेचना, गोलगप्पे की दूकान, मुर्गी पालन, दिहाड़ी–मजदूरी आदि कार्यों को करके अपनी आजीविका चलाने के इच्छुक हैं ।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, उसके प्राप्ति की पुष्टि ग्राम पंचायत बिलौटा, विकास खंड कुरारा, जनपद हमीरपुर का टीम सर्वेक्षण एवं अध्ययन के पश्चात प्राप्त आंकड़ों द्वारा होता है। सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य करते हुए बिलौटा ग्राम पंचायत के लोगों के जीवन स्तर को उच्च करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है। वर्णित योजना व्यक्ति के विकास से संबंधित विभिन्न आयामों पर अनुकूल प्रभाव डालते हुए सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित कर रही है जिसके कारण यह योजना लोगों में खुशहाली एवं समृद्धि का प्रतीक बनी हुई है।

ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर

ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए सरकार द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर में निवासित आबादी के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधियों के आधार पर किया गया है।

ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर की कुल आबादी–1200 है। गांव में कुल परिवारों की संख्या–250 एवं मतदाताओं की कुल संख्या–900 है। ग्राम पंचायत

रिरूआ बुजुर्ग में नल कनेक्शन स्कोप–289 है जिसके सापेक्ष 248 नल कनेक्शन दिये गये हैं।

ग्राम में निवासित केवल वही परिवार नल कनेक्शन से वंचित हैं, जो या तो रोजगार के कारण शहरों में चले गये हैं अथवा वह स्वेच्छा से नल कनेक्शन लेने से मना कर दिये हैं। ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त है जिससे प्रत्येक परिवार को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। नल कनेक्शन से वंचित परिवारों द्वारा स्वयं से स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था कर ली गयी है। ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग में कुल लगभग 1200 बीघा जमीन है जिसमें लगभग 600 बीघा जमीन पठारी होने के कारण अनुपजाऊ है। खेती–किसानी पर अधिकांश लोग आर्थिक रूप से निर्भर हैं, बचे हुए लोग मजदूरी आदि कार्यों को करके अपनी जीविका का निर्वाह कर रहे हैं। जातीय समीकरण में लगभग 40 प्रतिशत क्षत्रिय, 35 प्रतिशत निषाद एवं शेष 25 प्रतिशत में यादव, अहिरवार आदि जाति के लोग हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग, की कुल जनसंख्या, ग्राम पंचायत में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री लाल दिवान से ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग की समग्रता के संदर्भ में परिचर्चा किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके रिरूआ बुजुर्ग ग्राम पंचायत की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत

सुविधाओं, विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। हितधारकों एवं न्यादर्शों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग में एक प्राथमिक विद्यालय एवं एक ही उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री राजेश कुमार से हुई परिचर्चा के आधार पर प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में कुल स्टॉफ की संख्या–03 है एवं विद्यालय में कुल 57 विद्यार्थी नामांकित हैं। उच्च

प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री संदीप कुमार त्यागी ने बताया कि विद्यालय में कुल छात्र

नामांकन–45 है एवं विद्यालय में केवल एक ही शिक्षक, जो कि मै स्वयं हूँ, नियोजित हूँ। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हैं तथा विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग में दो आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित है जिसकी सहायिका श्रीमती शिवकान्ती एवं कुमकुम देवी से प्राप्त जानकारी के अनुसार आंगनबाड़ी केन्द्र में कुल 40 बच्चे नामांकित हैं। सहायिका से बच्चों एवं माताओं के स्वास्थ्य एवं पोषाहार तथा टीकाकरण के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी, जो कि समुचित पाया गया। स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने पर पता चला कि ग्राम पंचायत में एक स्वास्थ्य केन्द्र बना हुआ है लेकिन वह बहुत दिनों से बंद पड़ा है जो कि पहले खुलता था।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

प्रस्तुत अध्ययन में निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग की कुल जनसंख्या 1200 है। कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक जातीय प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार 1200/10 = 120 न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें महिलाओं एवं पुरूषों की समान (60:60) भागीदारी सुनिश्चित की गयी है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित

इकाइयों के अतिरिक्त ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग से संबद्ध हितधारकों से भी चर्चा करके अपेक्षित आंकड़े प्राप्त किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग की सम्पूर्ण जनसंख्या का 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग से सम्बद्ध नहीं था।

4.0 प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग में निवासित लोगों के जीवन स्तर को उच्च करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम का विवरण निम्नलिखित है–

4.1 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना एवं सामाजिक परिवर्तन

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन के इस खण्ड के अंतर्गत

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना का महिलाओं के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस खण्ड के अंतर्गत कुल 60 महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर वर्णित योजना का महिलाओं के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का विवरण प्रस्तुत किया गया है जो कि निम्नलिखित है–

- अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा पेट संबंधी बीमारियों तथा दूषित जल से होने वाली अनेक बीमारियों से छुटकारा मिला है जिसके कारण उनका स्वास्थ्य पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुआ है।
- 93 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि बीमारियों में कमी आने से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिसके कारण उनके पास पैसों की अब बचत हो रही है।
- 98 प्रतिशत महिला न्यादर्शों के अनुसार पाचन शक्ति में सुधार आया है।
- 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि जल संग्रह पर लगने वाले समय की बचत के कारण सिलाई–कढ़ाई जैसी गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका बढ़ी है जिसके कारण उनमें आर्थिक आत्म–निर्भरता की भावना आयी है।
- 96 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार बच्चों एवं परिवार को अधिक समय देने के कारण परिवार में खुशहाली का वातावरण निर्मित हुआ है।
- 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार महिलाओं द्वारा अपने बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।
- 96 प्रतिशत महिला न्यादर्शों के अनुसार कृषि एवं पशुपालन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण बढ़ी है।

इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं का समग्र विकास हुआ है। उन्हें परिवार एवं समाज में सम्मानजनक प्रस्थिति प्राप्त

हुई है। वर्णित योजना से महिलाओं के कार्य बोझ में कमी आने के कारण उनमें खुशहाली आयी है।

4.2 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में आये बदलाव

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में आये बदलावों का अध्ययन करने के लिए 120 न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का

प्रयोग इस खण्ड के विश्लेषण हेतु किया गया है। कुल 120 न्यादर्शों में से 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से बच्चों के

स्वास्थ्य स्तर में आये बदलावों का प्रभाव उनकी शिक्षा पर सकारात्मक रूप से पड़ा है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि योजना के लागू होने के बाद से ग्राम पंचायत में निवासित लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के कारण बच्चों का मानसिक विकास अधिक हुआ है क्योंकि अब उन्हें स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो रहा है। ग्राम में स्थित प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से हुई वार्ता के अनुसार दोनों विद्यालयों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त कर दिया गया है जिससे स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है। उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि वर्णित योजना के लागू होने के बाद से स्वास्थ्य स्तर में आये सुधार का प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ा है, बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आयी है, बच्चों की बोध क्षमता में वृद्धि हुई है जिसका प्रभाव बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन पर परिलक्षित हो रहा है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि अब बच्चे नियमित रूप से विद्यालय अध्ययन हेतु आ रहे हैं।

4.3 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना एवं स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वास्थ्य स्वास्थ्य स्तर में भी सुधार आया है। न्यादर्श में सम्मिलित 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के लागू होने के बाद से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है। 100 प्रतिशत अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि योजना के लागू होने के बाद से पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। 95 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों ने कहा कि वर्णित योजना के संचालन के कारण इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है क्योंकि जल जनित बीमारियों पर अब अंकुश लगा है। 95

प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य में अधिक सुधार देखा गया

है। 96 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों के अनुसार उनकी पाचन क्रिया में सुधार आया है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि अब जल उलपब्धता के कारण पूर्व निर्मित शौचालयों का परिवार के सभी सदस्यों द्वारा उपयोग किया जा रहा है जिसके कारण गंदगी एवं मक्खियों से होने वाली बीमारियों में भी कमी देखी जा रही है। आंगनबाड़ी कार्यकत्री से हुई चर्चा में पाया गया कि उनके यहां नामांकित बच्चों का स्वास्थ्य स्तर भी सुधरा है। उन्होंने बताया कि बच्चों को पोषाहार तो दिया ही जा रहा है, जो बच्चों के स्वास्थ्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, साथ

ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण बच्चों में होने वाली जल जनित बीमारियां भी कम हो गयी हैं, जिससे उनके स्वास्थ्य को दोहरा लाभ मिल रहा है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने ग्राम रिरूआ बुजुर्ग के लोगों के स्वास्थ्य स्तर में रूपांतरकारी बदलावों को प्रेरित किया है।

4.4 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार में आये बदलाव

प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं एवं हितधारकों से हुई परिचर्चा में पाया गया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से पूर्व गांव के केवल

समृद्ध एवं उच्च जातियों के लोगों को ही स्वच्छ पेयजल उपलब्ध था। न्यादर्शों ने यह भी बताया

कि उच्च जाति के लोगों द्वारा अपने नल से अछूत जाति के लोगों को पानी नहीं पीने दिया जाता था। 94 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों के अनुसार निम्न जाति के लोग कुओं एवं तालाबों में उपलब्ध जल से अपने दैनिक कार्यों को संपन्न करते थे। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा जल संकट के समाधान के साथ ही प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता भी सुनिश्चित हुई है। अध्ययन में सम्मिलित 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना द्वारा पेयजल को लेकर होने वाली लड़ाइयों में कमी आयी है जिसके कारण ग्राम में शांति का वातावरण निर्मित हुआ है। गांव में सहकार एवं सहयोग का भाव विकसित हुआ है। अवलोकन में पता चला कि लोगों में सामाजिक गतिशीलता आयी है जिसके कारण उनकी सोच में भी आधुनिक मूल्यों का समावेश हुआ है। उत्तरदाताओं से शादी–विवाह के संबंध में चर्चा करने पर पता चला कि लोगों में दहेज जैसी कुप्रथा के प्रति चेतना का विकास हुआ है। न्यादर्शों ने बताया कि अब वैवाहिक कार्यक्रमों में अधिक खर्च किया जा रहा है। अतएव यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा लोगों के सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक बदलाव आया है।

4.5 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना एवं रोजगार के अवसर

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के क्षेत्र में आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा करने पर 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना द्वारा युवाओं में पलायन की दर में कमी आयी है क्योंकि वह गांव में ही रहकर स्व–रोजगार के माध्यम से अपनी आजीविका चलाने के पक्षधर हैं। 93 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि शहरों में उन्हें वह सुविधायें नहीं प्राप्त होती हैं जो अपने घर में मिलती है। चूंकि अब जल संकट का भी समाधान हो गया

है, तो अब गांव में रहने की सभी अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न हो गयी हैं। न्यादर्श में सम्मिलित लोगों ने बताया कि महिलाओं की भागीदारी कृषि एवं पशुपालन में बढ़ी है। परिचर्चा में पाया

गया कि महिलायें दूध एवं घी बेचकर पैसे कमा रही हैं जिससे वह दैनिक खर्चों की पूर्ति कर रही हैं। युवाओं से समूह परिचर्चा में पाया गया कि अब वह गांव में ही रहने के इच्छुक हैं, युवाओं ने कहा कि यदि उनका कौशल विकास एवं बैंक से लोन मिल जाये तो वह अपने गांव में ही छोटे–मोटे रोजगार करके जीवकोपार्जन करेंगे। कुल मिलाकर वर्णित योजना युवाओं में आत्मविश्वास को जागृत करने में सफल रही है।

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना जिस ध्येय को संबोधित होकर कार्य कर रही है, उसके प्राप्ति की पुष्टि प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त आंकड़े करते हैं। सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के अंतर्गत कृत कार्य से ग्राम पंचायत रिरूआ बुजुर्ग में खुशहाली एवं समृद्धि आयी है। ग्राम पंचायत की जनता की संतुष्टि वर्णित योजना की महत्ता को स्थापित करती है। वर्णित योजना द्वारा रिरूआ बुजुर्ग के निवासियों का समग्र विकास पोषित हुआ है। यह योजना सतत् विकास लक्ष्यों को भी प्राप्त करने में मददगार सिद्ध हुई है।

ग्राम हसऊपुर सेंसा, ग्रा0पं0 कुपरा, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर

ग्रामीण क्षेत्र के प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए सरकार द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का

ग्राम हसऊपुर सेंसा, ग्राम पंचायत कुपरा, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर में निवासित आबादी के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम हसऊपुर सेंसा की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री छिद्दू प्रजापति से ग्राम हसऊपुर सेंसा की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके

हसऊपुर सेंसा ग्राम की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम हसऊपुर सेंसा में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, मूलभूत सुविधाओं, नल संयोजन आदि की

जानकारी प्राप्त की गई। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सर्वेश सिंह से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में कुल 13 विद्यार्थी नामांकित हैं एवं विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः

संतृप्त है जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। ग्राम हसऊपुर सेंसा में आंगनबाड़ी एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है।

ग्राम हसऊपुर सेंसा, ग्राम पंचायत कुपरा की कुल आबादी–235 है एवं कुल परिवारों की संख्या–52 तथा मतदाताओं की संख्या–160 है। ग्राम हसऊपुर सेंसा में नल कनेक्शन स्कोप–62 है जिसके सापेक्ष 58 नल कनेक्शन दिये जा चुके हैं अर्थात् ग्राम में निवासित प्रत्येक परिवार को नल संयोजन से आच्छादित किया जा चुका है। ग्राम हसऊपुर सेंसा में निवासित लगभग प्रत्येक परिवार को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। ग्राम में निवासित लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि एवं मजदूरी है। कृषि हेतु लगभग 200 बीघा जमीन उपपब्ध है। ग्राम में बहुसंख्यक आबादी यादव जाति के लोगों की है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम हसऊपुर सेंसा की कुल जनसंख्या–235 है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए ग्राम हसऊपुर सेंसा की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (235/10 = 23.5)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 24 लोगों (महिला (12) एवं पुरूष (12)) को, जो कि ग्राम हसऊपुर सेंसा के निवासी हैं, सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर वर्णित योजना के प्रभाव

का आकलन किया गया। साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में ग्राम हसऊपुर सेंसा के हितधारकों से भी चर्चा की गयी है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम हसऊपुर सेंसा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम हसऊपुर सेंसा की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम हसऊपुर सेंसा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था। साथ ही वर्णित योजना से वंचित परिवारों को भी अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम हसऊपुर सेंसा, ग्राम पंचायत कुपरा, वि0ख0 सरीला, जनपद हमीरपुर का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम हसऊपुर सेंसा में निवासित लोगों के जीवन स्तर को उच्च करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से ग्राम हसऊपुर सेंसा में निवासित लोगों के जीवन स्तर में हुए परिवर्तनों का वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से वर्णन किया गया है जो निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन के इस खण्ड के विश्लेषण में कुल 12 (कुल न्यादर्श 24 का 50 प्रतिशत) महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर महिलाओं

के जीवन स्तर में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् आये बदलावों का वर्णन किया गया है। अध्ययन की 100 प्रतिशत इकाइयों ने स्वीकार किया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचानल के बाद से महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि जल संकट का समाधान होने से महिलाओं के कार्य बोझ में कमी आयी है क्योंकि वर्णित योजना के संचालन से पूर्व महिलाओं का अधिकांश समय पेयजल

के संग्रह पर ही चला जाता था। 94 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने कहा कि समय एवं धन की बचत होने से आय अर्जक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। 96 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि आय अर्जक गतिविधियों में बढ़ी हुई भागीदारी तथा बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर अधिक समय देने के कारण परिवार एवं समाज में महिलाओं के सम्मान में वृद्धि हुई है। 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छता में भी वृद्धि हुई है। इस प्रकार से वर्णित योजना द्वारा महिलाओं को परिवार एवं समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ है। महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण उनकी सोच में भी आधुनिक मूल्यों का समावेश हुआ है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम हसऊपुर सेंसा, ग्राम पंचायत कुपरा की शिक्षा में भी बदलाव परिलक्षित हुए हैं। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि जब से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित की गयी है, तब से बच्चों की शिक्षा में सुधार आया है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि गांव के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है जिसके कारण बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजा जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से हुई वार्ता के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा विद्यालय को संतृप्त किया जा चुका है जिसके कारण नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता विद्यालय में हुई है। प्रधानाचार्य के अनुसार बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आयी है और उनमें पढ़ाई–लिखाई के प्रति जिज्ञासा भी उत्पन्न हुई है। 94 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आने के कारण बच्चों को बेहतर शिक्षा मिलने का

मार्ग प्रशस्त हुआ है। अवलोकन में पाया गया कि माता–पिता बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक

चिंतित हैं और वह अपने बच्चों को अच्छी–से–अच्छी शिक्षा दिलाना चाहते हैं।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वास्थ्य के संबंध में आये बदलावों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 96 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयां इस बात से सहमत हैं कि वर्णित योजना के संचालन के बाद से सभी आयु वर्ग के लोगों का स्वास्थ्य स्तर उच्च हुआ है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के लागू होने के बाद से जल जनित एवं पेट संबंधी बीमारियों में बहुत कमी आई है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि पीलिया, पेचिस, दस्त जैसी जल जलित बीमारियों से लोगों को बहुत हद तक मुक्ति मिली है।

98 प्रतिशत न्यादर्शो ने बताया कि दूषित जल से मुक्ति मिलने के कारण बच्चों के स्वास्थ्य में अधिक सुधार आया है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के बाद से भोजन ठीक से पचता है जिससे उन्हें पेट में गैस संबंधी बीमारियां बहुत कम होती हैं। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से उनकी

कार्य क्षमता बढ़ी है। 92 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने कहा कि महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण उनका सम्मान परिवार में बढ़ा है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा समग्र स्वास्थ्य को प्रोत्साहन मिला है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

न्यादर्शों एवं हितधारकों से प्राप्त जानकारी के अनुसार वर्णित योजना के लागू होने के पूर्व ग्राम हसऊपुर सेंसा के सभी परिवारों तक स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित नहीं थी। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि केवल उच्च एवं अमीर लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की

उपलब्धता थी क्योंकि निम्न आय एवं जाति के लोग स्वच्छ पेयजल पर होने वाले खर्च को वहन करने में सक्षम नहीं थे। 100 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित

किया गया है। 95 प्रतिशत लोगों ने बताया कि प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने से अब पेयजल के कारण होने वाली लड़ाइयों में कमी आयी है। 96 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है, लोगों की सोच में आधुनिक मूल्यों का समावेश हुआ है। ग्राम हसऊपुर सेंसा में सामाजिक एकता एवं सहकार का भाव उत्पन्न हुआ है। शादी–विवाह में आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा करने पर अध्ययन में सम्मिलित लोगों ने बताया कि बाल विवाह एवं बेमेल विवाह में कमी आयी है एवं शादी–विवाह में होने वाले खर्च में बढ़ोत्तरी हुई है।

4.5 रोजगार के अवसर

अध्ययन की इकाइयों एवं हितधारकों से हुई परिचर्चा से ज्ञात हुआ कि हसऊपुर सेंसा ग्राम की अधिकांश आबादी खेती–किसानी एवं मजदूरी का कार्य करके जीवन–यापन करती है। कुछ लोग शहरों में जीवकोपार्जन के कारण पलायन कर गये हैं। अध्ययन की 96 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के उपलब्ध विकल्पों में महिलाओं एवं पुरूषों की भागीदारी बढ़ी है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि कृषि एवं पशुपालन में युवाओं की भागीदारी बढ़ी हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 92 उत्तरदाताओं ने बताया कि पशुपालन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है क्योंकि अब उनके पास पर्याप्त समय बच रहा है और जल संकट का समाधान एवं स्वच्छ पेयजल की उपलब्ध्ता के कारण पशुओं के पीने के लिए भी पर्याप्त स्वच्छ पेयजल उपलब्ध है। 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि युवाओं के पलायन दर में भी कमी देखी गई है क्योंकि अब स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने के कारण वह गांव में ही रहकर जीवकोपार्जन करना चाहते हैं। युवाओं में

वर्णित योजना के कारण आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ है क्योंकि वर्णित योजना द्वारा रोजगार के

बेहतर विकल्प उपलब्ध हुए हैं, जिससे युवाओं की आय में वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त विभिन्न आयामों के संबंध में न्यादर्शों एवं हितधारकों से प्राप्त आंकड़ों के समग्र विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकालना समीचीन होगा कि ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा कृत कार्य के प्रति ग्राम हसऊपुर सेंसा के लोगों में संतुष्टि एवं खुशहाली का भाव दृष्टिगोचर हो रहा है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि वर्णित योजना अपने उद्देश्यों के अनुसार कार्य कर रही है एवं

लोगों के जीवन स्तर को उच्च करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस प्रकार से वर्णित योजना हसऊपुर सेंसा ग्राम के समग्र विकास को समर्पित है और ग्राम में निवासित लोगों के जीवन में उल्लेखनीय बदलावों को लाने में सक्षम हुई है।

ग्राम धरऊपुर, ग्रा0 पं0 जलालपुर, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर

ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए सरकार द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम धरऊपुर, ग्राम पंचायत जलालपुर, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर में निवासित आबादी के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधियों के आधार पर किया गया है।

ग्राम धरऊपुर, ग्राम पंचायत जलालपुर वि0ख0 सरीला, जनपद हमीरपुर की कुल आबादी–225 है। गांव में कुल परिवारों की संख्या–60 एवं मतदाताओं की कुल संख्या–125 है।

ग्राम धरऊपुर में नल कनेक्शन स्कोप–71 है जिसके सापेक्ष 71 नल कनेक्शन दिये भी गये हैं

अर्थात् धरऊपुर ग्राम नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त है जिससे प्रत्येक परिवार को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। धरऊपुर ग्राम में लगभग 800 बीघा जमीन है जो कि पूर्णतः उपजाऊ है, जो कृषि कार्य के लिए अनुकूल है। ग्राम में निवासित लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि है। जातीय समीकरण में अहिरवार जाति के लोग बहुसंख्यक हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम धरऊपुर, ग्राम पंचायत जलालपुर की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री सुनील कुमार से ग्राम धरऊपुर की समग्रता के संदर्भ में परिचर्चा किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके धरऊपुर ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम धरऊपुर में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। हितधारकों एवं न्यादर्शों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम धरऊपुर में एक प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रामकुमार से हुई परिचर्चा के आधार पर प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में कुल स्टॉफ की संख्या–02 है एवं विद्यालय में कुल 28 विद्यार्थी नामांकित हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में

मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हैं तथा विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। ग्राम धरऊपुर में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित है जिसकी सहायिका ललिता देवी से प्राप्त जानकारी के अनुसार आंगनबाड़ी में कुल 25 बच्चे नामांकित हैं। सहायिका से बच्चों एवं माताओं के स्वास्थ्य एवं पोषाहार तथा टीकाकरण के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी, जो कि समुचित पाया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम में कोई–भी स्वास्थ्य केन्द्र संचालित नहीं है जिसके कारण लोगों को इलाज हेतु बहुत दूर जाना पड़ता है।

नोट : *अध्ययन का उद्‌देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

प्रस्तुत अध्ययन में निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम धरऊपुर की कुल जनसंख्या 225 है। कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार 225/10 = 22 (पूर्ण करने पर) न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें महिलाओं एवं पुरूषों की समान (11:11) भागीदारी सुनिश्चित की गयी है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित इकाइयों के अतिरिक्त ग्राम धरऊपुर से संबद्ध हितधारकों से भी चर्चा करके अपेक्षित आंकड़े प्राप्त किये गये हैं।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम धरऊपुर में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम धरऊपुर की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम धरऊपुर से सम्बद्ध नहीं था।

4.0 प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्राप्त परिणाम

ग्राम धरऊपुर, ग्राम पंचायत जलालपुर, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम धरऊपुर में निवासित लोगों के जीवन स्तर को उच्च करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम निम्नलिखित हैं–

4.1 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना एवं सामाजिक परिवर्तन

प्रस्तुत अध्ययन के इस खण्ड के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना का महिलाओं के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस खण्ड के अंतर्गत कुल 11 महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग करते हुए पक्षपात रहित एवं वस्तुनिष्ठ रूप से निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

- सहभागी मूल्यांकन के आधार पर किये गये प्रस्तुत अध्ययन में 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिसके कारण जल जनित बीमारियों के इलाज हेतु कर्ज लेने से मुक्ति मिली है।
- 100 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों ने स्वीकार किया कि पेचिस, डायरिया, दस्त एवं अन्य बीमारियां, जो कि दूषित पेयजल के कारण होती हैं, उनसे मुक्ति मिली है।
- 96 प्रतिशत महिला न्यादर्शों के अनुसार पाचन शक्ति में सुधार आया है।

- 93 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि समय की बचत के कारण सिलाई–कढ़ाई जैसी गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका बढ़ी है जिसके कारण उनकी प्रत्यक्ष आय में वृद्धि हुई है।
- 96 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार महिलाओं के प्रति सामाजिक धारणा में सकारात्मक सुधार आया है।
- अध्ययन में सम्मिलित 98 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि परिवार में उनका सम्मान बढ़ा है, क्योंकि अब वह आय अर्जन भी कर रही हैं तथा परिवार एवं बच्चों की देखभाल पर भी अधिक समय देने में सक्षम हुई हैं।
- 93 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार कृषि एवं पशुपालन में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है।

उक्त के आधार पर यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार आया है तथा उनका सशक्तिकरण भी हुआ है। आय अर्जक गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका बढ़ने के कारण उनमें आत्मनिर्भरता की भावना का भी समावेश हुआ है।

4.2 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में आये बदलाव

वर्णित योजना द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में आये बदलावों का अध्ययन करने के लिए 22 न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर धरऊपुर ग्राम में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में आये बदलावों के संबंध में वस्तुनिष्ठ

एवं निष्पक्ष रूप से निष्कर्ष निकाले गये हैं। अध्ययन में सम्मिलित कुल 22 न्यादर्शों में से 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से

ग्राम धरऊपुर में शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार अभिभावकों द्वारा नियमित रूप से बच्चों को विद्यालय भेजा जा रहा है एवं उन्हें घर पर भी अध्ययन हेतु प्रेरित किया जा रहा है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण वह अपनी पढ़ाई पर अधिक ध्यान दे पा रहे हैं। ग्राम में स्थित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से

बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आयी है जिसके कारण उनका स्वास्थ्य स्तर बेहतर हुआ है और उनकी बोध क्षमता में भी सुधार देखा गया है। प्रधानाचार्य ने बताया कि वर्णित योजना के कारण बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन में पूर्व की अपेक्षा सुधार देखा गया है। बालिका की शिक्षा के संदर्भ में चर्चा करने पर प्रधानाचार्य श्री रामकुमार ने बताया कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं का नामांकन एवं उपस्थिति दर में अधिक वृद्धि हुई है। अवलोकन में पाया गया कि लोगों के बात करने का ढंग एवं विभिन्न मुद्दों के प्रति उनके विचार इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि वर्णित योजना के कारण शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता का विकास हुआ है और वह बच्चों के भविष्य के प्रति अधिक चिंतित हैं।

4.3 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना एवं स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि योजना के लागू होने के बाद से पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि जब से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना का संचालन किया गया है, तब से इलाज पर होने वाले पैसे की बचत हुई है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पूर्व की अपेक्षा उन्नत हुआ है क्योंकि अब उन्हें स्वच्छ पेयजल पीने हेतु मिल रहा है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार उनकी पाचन क्रिया में सुधार आया है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि बच्चों एवं महिलाओं के ऊपर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव अधिक देखे गये हैं क्योंकि अब बहुत ही कम बच्चे बीमार होते हैं तथा महिलाओं का भी स्वास्थ्य बहुत अच्छा हुआ है। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पूर्व में दूषित जल पीने के कारण उनके दांत का रंग एवं हड्डियां कमजोर हो जाती थी, जिसका

समाधान अब उपलब्ध हो सका है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना का स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्णित योजना ने लोगों के समग्र

स्वास्थ्य में सुधार किया है जिसके कारण धरऊपुर ग्राम में खुशहाली आयी है।

4.4 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार में आये बदलाव

प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से पहले गांव के केवल समृद्ध एवं उच्च जातियों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित थी। गांव के अन्य लोग कुओं एवं तालाबों द्वारा प्राप्त होने वाले जल का उपयोग अपने दैनिक कार्यों में करते थे। वर्णित योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार में आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा करने पर 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित

योजना के संचालन के बाद से सभी परिवारों को नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो रहा है जिससे गांव में होने वाले सामाजिक तनाव में कमी आयी है और लोगों में एकता एवं

सहकार की भावना का विकास हुआ है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि सामाजिक गतिशीलता आने के कारण लोगों का रहन–सहन उच्च हुआ है। 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार रहन–सहन का स्तर उच्च होने के कारण शादी–विवाह में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ है क्योंकि अब अधिकांश लोग धरऊपुर गांव में रिश्ता करना पसंद कर रहे हैं। 93 प्रतिशत न्यादर्शों ने यह भी बताया कि बाल–विवाह के प्रति लोगों में जागरूकता आयी है जिसके कारण वह

बाल–विवाह करने से बच रहे हैं। इस प्रकार से यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा लोगों के सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक बदलाव किया गया है।

4.5 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना एवं रोजगार के अवसर

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के क्षेत्र को प्रभावित की है। कुल 22 न्यादर्शों में से 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के संचालन

से कृषि एवं पशुपालन में महिलाओं एवं युवाओं की भागीदारी पूर्व की अपेक्षा बढ़ी है, क्योंकि अब महिलाओं के पास पर्याप्त समय और उनका स्वास्थ्य भी अच्छा है। वहीं दूसरी ओर युवाओं में

भी अपने गांव के प्रति लगाव उत्पन्न होने तथा वर्णित योजना द्वारा उपलब्ध स्वच्छ पेयजल के कारण कृषि एवं पशुपालन का कार्य संभव हो पाया है। गांव की जमीन उपजाऊ होने के कारण भी कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। न्यादशों से युवाओं के पलायन के संदर्भ में बात करने पर पता चला कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से पलायन की दर में कमी आयी है क्योंकि अब युवा लोग शहरों की दुश्वारियों से परेशान हो चुके हैं, इसलिए वह गांव में ही रहकर रोजगार के विविध विकल्पों में हाथ आजमा रहे हैं। 93 प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं ने बताया कि वह डेयरी, किराना की दूकान, सब्जी उत्पादन, मुर्गी पालन आदि रोजगारपरक कार्यों को करने के इच्छुक हैं। इस प्रकार से युवाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है और वह विभिन्न प्रकार के रोजगारपरक कार्यों को करके अपनी जीविका चलाना पसंद कर रहे हैं। उनमें आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबन की भावना का विकास हुआ है।

''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में बहुत हद तक सफल रही है जिसकी पुष्टि अध्ययन द्वारा प्राप्त आंकड़े करते हैं। यह योजना जल संकट का समाधान प्रस्तुत करने के साथ ही बहु–आयामी लक्ष्यों को भी संबोधित है। महिलाओं की दशाओं को उन्नत करने, स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधारात्मक बदलावों को लाने, सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन करके सामाजिक एकता एवं सद्भावना स्थापित करने तथा रोजगार के क्षेत्र में विविध विकल्पों के प्रति युवाओं के मनोबल को सुदृढ़ करने में वर्णित योजना उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय भूमिका निभायी है। धरऊपुर ग्राम के लोगों में खुशहाली का प्रतीक वर्णित योजना बनी हुई है। लोगों में योजना के प्रति संतुष्टि का भाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

ग्राम जरिया टीला, ग्राम पंचायत मनकहरी, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2019 में ''जल जीवन मिशन'' योजना संचालित किया गया। ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना है। स्वच्छ पेयजल उपलब्ध

कराने के साथ ही वर्णित योजना का बहु–आयामी उद्देश्य भी है। प्रस्तुत अध्ययन में ग्राम जरिया टीला, ग्राम पंचायत मनकहरी, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर में निवासित आबादी के जीवन स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधियों का प्रयोग करते हुए किया गया है।

हितधारकों एवं न्यादर्शों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम जरिया टीला, ग्राम पंचायत मनकहरी वि0ख0 सरीला, जनपद हमीरपुर की कुल आबादी–450 है। गांव में कुल परिवारों की संख्या–105 एवं मतदाताओं की कुल संख्या–320 है। ग्राम जरिया टीला में नल कनेक्शन स्कोप–127 है जिसके सापेक्ष केवल 93 नल कनेक्शन दिये गये हैं। कुछ लोग नल कनेक्शन लेने के इच्छुक नहीं हैं जिसके कारण नल कनेक्शनों के संख्या कम है, यद्यपि कि ग्राम में निवासित प्रत्येक परिवार को नल संयोजन से संतृप्त किया जा चुका है। नल संयोजन से संतृप्त

परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। जरिया टीला ग्राम में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि है,

इसके अतिरिक्त मजदूरी करके भी लोगों द्वारा जीवन निर्वाह किया जा रहा है। गांव में लगभग 900 बीघा जमीन उपलब्ध है, जो कि 100 प्रतिशत उपजाऊ है। जातीय समीकरण में अहिरवार एवं अनुरागी जाति के लोग बहुसंख्यक हैं जो कि अनुसूचित जाति के अंतर्गत आते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम जरिया टीला, ग्राम पंचायत मनकहरी की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री तुलसी दास से ग्राम जरिया टीला की समग्रता के संदर्भ में परिचर्चा किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके जरिया टीला ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम जरिया टीला में संचालित विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। हितधारकों एवं न्यादर्शों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम जरिया टीला में एक प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री टीकाराम शाक्य से हुई परिचर्चा के आधार पर प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में कुल स्टॉफ की संख्या–02 है एवं विद्यालय में कुल 44 विद्यार्थी नामांकित हैं जिसमें 21 बालक एवं 23 बालिकायें हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हैं तथा विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति

की जा रही है। ग्राम जरिया टीला में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित है जिसकी सहायिका श्रीमती फूला देवी एवं अखिलेश कुमारी से प्राप्त जानकारी के अनुसार आंगनबाड़ी में 0–3 वर्ष के कुल 35 एवं 3–6 वर्ष के कुल 16 बच्चे नामांकित हैं। सहायिका से आंगनबाड़ी में नामांकित बच्चों एवं माताओं के स्वास्थ्य एवं पोषाहार तथा टीकाकरण के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी, जो कि संतोषजनक पाया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम में कोई–भी स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

प्रस्तुत अध्ययन में निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम जरिया टीला की कुल जनसंख्या 450 है। कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार 450/10 = 45 न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन का आधार बनाया गया है जिसमें 23 महिला एवं 22 पुरूषों को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित इकाइयों के अतिरिक्त ग्राम जरिया टीला से संबद्ध हितधारकों से भी चर्चा करके अपेक्षित आंकड़े प्राप्त किये गये हैं।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम जरिया टीला में सरकार द्वारा संचालित योजना "हर घर नल–हर घर जल" योजना के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम जरिया टीला की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही

ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम जरिया टीला से सम्बद्ध एवं वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

4.0 प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि के आधार पर प्राप्त परिणाम

ग्राम जरिया टीला, ग्राम पंचायत मनकहरी, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम जरिया टीला में निवासित लोगों के जीवन स्तर को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है जिसकी पुष्टि विभिन्न आयामों के अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणामों से होती है, जो कि निम्नलिखित हैं–

4.1 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना एवं सामाजिक परिवर्तन

इस खण्ड के अंतर्गत कुल 23 महिला उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श में सम्मिलित कुल 94 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि वर्णित योजना के लागू होने के बाद से उनकी सामाजिक प्रस्थिति एवं प्रतिष्ठा में सकारात्मक बदलाव आया है

क्योंकि लोगों की सोच में परिवर्तन होने के कारण उनके मनः पटल पर महिलाओं के प्रति निर्मित धारणा में परिवर्तन आया है जिसके कारण वह महिलााओं के अस्तित्त्व एवं समाज के विकास में

उनके योगदान को स्वीकार करने लगे हैं। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके समग्र स्वास्थ्य में सुधार दृष्टिगोचर हुआ है जिससे वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वयं को ऊर्जावान महसूस करती हैं। 93 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि वर्णित योजना के कारण समय एवं धन की बचत होने से उनकी भागीदारी श्रम बल में बढ़ी है जिसके कारण वह स्वावलंबी बनने की ओर अग्रसर हैं। 96 प्रतिशत महिलाओं ने

स्वीकार किया कि कृषि एवं पशुपालन में उनकी भागीदारी अधिक बढ़ी है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं में आत्मविश्वास आया है और वर्णित योजना ने उनके सशक्तिकरण में महती भूमिका निभाया है।

4.2 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में आये बदलाव

ग्राम जरिया टीला में एक प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्रधानाचार्य श्री टीकाराम शाक्य से हुई वार्ता में पाया गया कि ''हर घर नल–हर घर जल''

योजना के संचालन से विद्यालय को नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है जिसके कारण स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के साथ ही विद्यालय में निर्मित बंद पड़े शौचालय

भी पूर्ण रूप से कार्यात्मक हो गये हैं। स्वच्छ जल की उपलब्धता एवं शौचालयों के कार्यात्मक होने से बालक एवं बालिकाओं के नामांकन दर एवं उपस्थिति में वृद्धि हुई है। प्रधानाचार्य ने बताया कि बच्चों की संख्या बढ़ने से शिक्षकों द्वारा भी अध्यापन कार्य पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। न्यादर्श में सम्मिलित 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के कारण इलाज पर होने वाले खर्च की बचत होने से धन निवेश का प्रवाह बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलवाने की ओर हुआ है। 95 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों के अनुसार गांव में स्वच्छ जल की उपलब्धता से बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है जिसके कारण सरकारी एवं निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं और घर पर भी नियमित रूप से पर्याप्त समय अध्ययन कार्य पर दे रहे हैं। अतएव यह कहा जा सकता है कि वर्णित योजना द्वारा बच्चों की साक्षरता दर में वृद्धि हुई है और गांव में शिक्षा के महत्त्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है।

4.3 ‘‘हर घर नल–हर घर जल‘‘ योजना द्वारा स्वास्थ्य में आये बदलाव

प्रस्तुत अध्ययन के इस भाग में कुल 45 न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ‘‘हर घर नल–हर घर जल’’ योजना द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र में आये बदलावों का अध्ययन किया गया है। वर्णित योजना द्वारा स्वास्थ्य में आये बदलाव निम्नलिखित हैं–

- प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत इकाइयों ने स्वीकार किया कि वर्णित योजना के कारण दूषित पेयजल से मुक्ति मिली है जिसके कारण उनका स्वास्थ्य स्तर पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुआ है। अब उन्हें जल जनित बीमारियों से लगभग मुक्ति मिल चुकी है।

- न्यादर्श की 98 प्रतिशत इकाइयों ने कहा कि उनकी पाचन क्रिया पूर्व की अपेक्षा अच्छी हुई है। अब खाया हुआ खाना पूर्ण रूप से पच रहा है जिससे पेट दर्द एवं गैस की समस्या छुटकारा मिला है।

- 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनका कार्य प्रदर्शन पूर्व की अपेक्षा बेहतर हुआ है।

- 93 प्रतिशत लोगों ने कहा कि गरीबी के कारण लोग दूषित जल से होने वाली बीमारियों का इलाज नहीं करा पाते थे, यदि कराते भी थे, तो उसके लिए कई बार मजबूरी में

कर्ज लेना पड़ता था। अब स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से बीमारियों में बहुत कमी आयी है जिससे कर्ज जाल में फसने से सुरक्षा प्राप्त हुई है।

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर सुधार किया गया है। लोगों के स्वास्थ्य को उन्नत करने में वर्णित योजना बहुत उपयोगी है। यह योजना ना केवल स्वास्थ्य में सुधार कर रही है बल्कि स्वास्थ्य में सुधार करने के साथ–साथ आर्थिक सुदृढ़ता भी प्रदान कर रही है।

4.4 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार में आये बदलाव

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधियों पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम

जरिया टीला में निवासित सभी परिवारों तक स्वच्छ पेयजल की पहुंच सुनिश्चित हुई है, जबकि

इसके पूर्व गांव के केवल समृद्ध लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल उलपब्ध था, क्योंकि स्वच्छ पेयजल जल पर होने वाले खर्च का वहन कर पाना निम्न आय वर्ग के लोगों के सामर्थ्य से बाहर था। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि वर्णित योजना के प्रभावी संचालन के कारण गांव में जल प्राप्ति के लिए होने वाले झगड़ों में कमी आयी है। हितधारकों एवं न्यादर्शों से प्राप्त जानकारी के अनुसार वर्णित योजना द्वारा ना केवल जल संकट का समाधान प्रस्तुत किया गया है, अपितु इस योजना ने सामाजिक सद्भाव एवं एकता की भावना को भी प्रबल किया है। शादी–विवाह के प्रतिमानों में भी यह योजना बदलाव करने में सफल रही है क्योंकि अब लोगों द्वारा बेमेल विवाह को हतोत्साहित किया जा रहा है। लोगों की सोच में परिवर्तन आने के कारण लड़के एवं लड़कियों की पंसद को विवाह के मामले में प्राथमिकता दी जा रही है। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक गतिशीलता को प्रेरित करते हुए लोगों की सोच में आधुनिक मूल्यों को समावेशित किया गया है जिसके सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

4.5 ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना एवं रोजगार के अवसर

न्यादर्शों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम जरिया टीला की अधिकांश आबादी कृषि कार्यों से अपनी आजीविका चलाती है। गांव के कुछ लोग शहरों में जाकर मजदूरी एवं कारखानों में काम करके जीवन–यापन कर रहे हैं। गावं के अनेक युवा भी रोजगार के कारण शहरों में पलायन कर गये हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्शों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के बाद से रोजगार के क्षेत्र में आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा करने पर पता चला कि कृषि एवं पशुपालन तथा सिलाई–कढ़ाई में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है क्योंकि अब उनके पास पर्याप्त समय तथा पूंजी निवेश हेतु धन की भी बचत हो रही है। वर्णित योजना का युवाओं पर पड़ने

वाले प्रभाव के संदर्भ में बात करने पर 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से युवाओं में अपने गांव के प्रति लगाव बढ़ा है जिसके कारण वह शहरों में जाकर काम करना पंसद नहीं कर रहे हैं क्योकि उन्हें मूलभूत सुविधायें गांव में ही

मिल रही हैं। 93 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि वह ई–रिक्शा, गोल गप्पे की दूकान, खेती, मोबाइल शॉप, किराना की दूकान आदि रोजगार परक कार्यों को करके गांव में ही रहते हुये अपनी जीविका चलाना पसंद करते हैं। अध्ययन में सम्मिलित युवाओं ने बताया कि वह योजना के प्रति बहुत आशावान हैं क्योंकि वर्णित योजना ने मेरे आत्मविश्वास को उच्च करके एक

सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर प्रदान किया है। इस प्रकार से यह कह सकते हैं कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा युवाओं में उत्साह का संचार हुआ है और महिलाओं में भी रोजगारपरक गतिविधियों के प्रति झुकाव बढ़ा है।

''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ग्राम जरिया टीला, ग्राम पंचायत मनकहरी, विकास खण्ड सरीला, जनपद हमीरपुर में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में बहुत हद तक सफल रही है जिसकी पुष्टि अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधियों पर आधारित अध्ययन द्वारा प्राप्त आंकड़े करते हैं। वर्णित योजना व्यक्ति के विकास से संबंधित विभिन्न आयामों को स्वयं में समावेशित करते हुए सर्वांगीण विकास को समर्पित है। योजना द्वारा अपने बहु–आयामी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सरहानीय कार्य किये गये हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक एकता एवं सद्भावना स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन् किया गया है जिसके कारण योजना के प्रति ग्रामीण लोगों में संतुष्टि का भाव दिखलाई पड़ता है।

ग्राम पंचायत करगवाँ, विकास खण्ड गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर

सरकार द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का करगवाँ ग्राम पंचायत में निवासित आबादी के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम पंचायत करगवाँ की

जनसंख्या, गांव में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, परिवारों को प्राप्त नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती नीतू राजपूत पत्नी विनय राजपूत से ग्राम पंचायत करगवाँ की समग्रता के संदर्भ

में बात की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके गांव की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम पंचायत में संचालित एक प्राथमिक विद्यालय एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, मूलभूत सुविधाओं, नल संयोजन की जानकारी प्राप्त की गई। प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती कैलाश राजपूत से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्राथमिक विद्यालय में कुल 07 शिक्षक नियोजित हैं तथा विद्यालय में कुल नामांकन 106 है। पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री नन्दराम ने बताया कि विद्यालय में कुल 06 शिक्षक नियोजित हैं तथा विद्यालय में कुल छात्र संख्या–95 है। उक्त विद्यालयों के प्रधानाध्यापक/प्रधानाध्यापिका से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त है जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। करगवाँ ग्राम पंचायत की कुल आबादी 1622 (वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार) है एवं कुल परिवारों की संख्या–410 तथा मतदाताओं की संख्या–1293 है। ग्राम पंचायत करगवाँ में नल संयोजन स्कोप–389 है जिसके सापेक्ष 413 नल कनेक्शन दिये जा चुके हैं अर्थात् प्रत्येक परिवार को नल संयोजन से आच्छादित करते हुये ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। ग्राम में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र की कार्यकत्री श्रीमती पाना देवी से प्राप्त जानकारी के अनुसार उनके यहां कुल 98 बच्चे नामांकित हैं। ग्राम में कोई–भी स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है। ग्राम में लगभग 785 बीघा जमीन है जिसमें से लगभग 760 बीघा जमीन उपजाऊ है। ग्राम में लोगों की आजीविका का मुख्य आधार कृषि है। ग्राम में बहुसंख्यक आबादी अहिरवार जाति के लोगों की है, उसके बाद राजपूत जाति के लोग हैं।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

करगवाँ ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या–1622 है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। करगवाँ ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (1622/10 = 162)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 162 लोगों (महिला और पुरूष) को, जो कि करगवाँ ग्राम पंचायत के निवासी हैं, सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर योजना के प्रभाव को जाना गया। साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में करगवाँ ग्राम पंचायत के हितधारकों से भी चर्चा किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

करगवाँ ग्राम पंचायत में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम पंचायत की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो करगवाँ ग्राम पंचायत से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम पंचायत करगवाँ का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम पंचायत करगवाँ में निवासित लोगों के जीवन स्तर को उच्च करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से करगवाँ ग्राम पंचायत में निवासित लोगों के जीवन स्तर में हुए परिवर्तन का वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से वर्णन किया गया है, जो निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन के इस खण्ड का विश्लेषण कुल 81 (162 का 50 प्रतिशत) महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर किया गया है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। 93 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वर्णित योजना लागू होने के पूर्व स्वच्छ पेयजल की प्राप्ति नहीं हो पाती थी, जिसके कारण जल जनित अनेक प्रकार की बीमारियां प्रायः हुआ करती थी, जो स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता था। 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पश्चात् इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है क्योंकि अब दूषित जल से होने वाली बीमारियां लगभग समाप्त हो गयी हैं। 96 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि वह परिवार एवं बच्चों को अब अधिक समय दे पा रही हैं जिससे परिवार में उनका सम्मान बढ़ा है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि अब समय की बचत अधिक हो रही है जिसका उपयोग वह सिलाई–कढ़ाई जैसे कार्यों में कर रही हैं। 93 प्रतिशत महिलाओं ने

बताया कि वह पूर्व की अपेक्षा अधिक जागरूक हुई हैं। 92 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि उनकी भागीदारी रोजगार में बढ़ी है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर

घर जल'' योजना ने महिलाओं के जीवन में उल्लेखनीय सुधार किया है जिससे वह स्वावलंबी होने के साथ ही सशक्त भी हुई हैं।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम पंचायत करगवाँ में एक प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय अवस्थित है। उक्त दोनों विद्यालयों के प्रधानाचार्य से वार्ता करने पर पता चला कि वर्णित योजना के संचालन के पश्चात् विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन दर में वृद्धि हुई है एवं विद्यार्थियों की ड्राप

आउट दर में भी कमी आयी है। प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती कैलाश राजपूत ने बताया कि अपेक्षाकृत बालिकाओं के नामांकन एवं उपस्थिति दर में वर्णित योजना के संचालन

के पश्चात् अधिक वृद्धि हुई है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है और वह बच्चों की शिक्षा पर पूर्व की अपेक्षा अधिक निवेश कर रहे हैं। 97 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित लोगों ने स्वीकार किया कि अब बच्चों को नियमित रूप से तैयार करके समय से विद्यालय भेजा जा रहा है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि पहले बच्चों का स्वास्थ्य ठीक ना रहने के कारण प्रतिदिन विद्यालय नहीं जा पाते थे, लेकिन अब स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण स्वास्थ्य

अच्छा रहता है, जिससे वह प्रतिदिन विद्यालय जाते हैं। 100 प्रतिशत अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्शों ने बताया कि माता–पिता एवं परिवार के लोग बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दे रहे हैं और घर पर पढ़ाई करने के लिए बच्चों को पर्याप्त समय दे रहे हैं एवं बच्चों पर पढ़ने का दबाव भी बना रहे हैं। इस प्रकार से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा साक्षरता दर में सुधार करने के साथ ही ज्ञानवान एवं योग्य पीढ़ी तैयार की रही है, जो सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी सहायक होगी।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

संपूर्ण न्यादर्श 162 और हितधारकों से चर्चा, अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन से प्राप्त तथ्यों से ज्ञात हुआ कि 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के लागू होने से उनके स्वास्थ्य संबंधी स्थितियों में बदलाव आया है। जल जनित एवं पेट से संबंधित बीमारियों में कमी आई है। न्यादर्श में सम्मिलित 97 प्रतिशत लोगों ने बताया कि पीलिया, पेचिस, दस्त जैसी बीमारियों में अधिक कमी आयी है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि अब भोजन ठीक से पचता है, जिससे पेट में गैस संबंधी परेशानी बहुत कम हुई है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार स्वास्थ्य संबंधी खर्च में कमी आयी है। खर्च में कमी आने से बचे हुए पैसे का उपयोग बच्चों की पढ़ाई–लिखाई एवं खेती–बाड़ी के कार्यों में लगाकर लाभ कमा रहे हैं। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार शारीरिक एवं मानसिक बीमारियां कम होने से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है जिससे वह स्वयं को हमेशा ऊर्जावान महसूस करते हैं।

अतएव कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य स्तर उच्च होने से करगवाँ ग्राम पंचायत में निवासित लोगों में मानसिक संतुष्टि का भाव देखने को मिला। अवलोकन में पता चला कि ''हर

घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र में आये सुधार के कारण लोगों में उच्च स्तर की संतुष्टि है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि करगवाँ ग्राम पंचायत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि ''हर

घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने से पूर्व ग्राम पंचायत में निवासित उच्च जातियों एवं समृद्ध लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता थी। गरीब एवं वंचित वर्ग के लोग तालाबों एवं कुओं के पानी से ही अपनी दिनचर्या का काम करते थे। चूंकि अब प्रत्येक परिवार को ''हर

घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करा दिया गया है जिससे प्रत्येक परिवार को नियमित रूप से स्वच्छ जल की प्राप्ति हो रही है और उनका स्वास्थ्य स्तर भी स्वच्छ जल की उपलब्धता के कारण अच्छा हुआ है। स्वच्छ पेयजल की पहुंच ने उनके सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन करने के साथ ही सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन किया है। लोगों के दृष्टिकोण में आधुनिकता का समावेश हुआ है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने करगवाँ ग्राम पंचायत में एकता की भावना को बल दिया है, जल के कारण होने वाले लड़ाई–झगड़ों को कम किया है, सामाजिक अंतः–क्रिया में वृद्धि किया है। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित किया है।

न्यादर्श में सम्मिलित बहुसंख्यक आबादी 82 प्रतिशत ने ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शादी–विवाह के प्रतिमान में बदलाव के बारे में अनभिज्ञता प्रकट की जबकि अवलोकन एवं हितधारकों से चर्चा में पाया गया कि युवाओं की पंसद में परिवर्तन आया है। अभिभावकों के स्थान पर वर एवं वधू की पसंद को प्राथमिकता दिया रहा है। रहन–सहन का स्तर उच्च होने से वैवाहिक कार्यक्रमों में होने वाले खर्च में भी बढ़ोत्तरी देखी जा रही है।

4.5 रोजगार के अवसर

न्यादर्श में सम्मिलित बहुसंख्यक इकाई 100 प्रतिशत ने बताया कि ग्राम पंचायत करगवाँ में रोजगार का मुख्य साधन कृषि एवं पशुपालन है। कुछ लोग बाहर शहरों में रहकर छोटे–मोटे रोजगार में सलंग्न होकर जीवकोपार्जन कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से सभी परिवारों तक शुद्ध पेयजल की पहुंच ने आम लोगों के समय की बचत की है। साथ ही लोगों को आम बीमारियों से बचाव कर स्वस्थ जीवन जीने का मौका दिया है। ऐसे में समय

और पैसे दोनों की बचत ने उन्हें रोजगार के नए अवसर दिए हैं। पैसे एवं समय की बचत के कारण स्वरोजगार में लोगों द्वारा अधिक निवेश भी किया जा रहा है। 93 प्रतिशत न्यादर्शों ने

बताया कि स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण पशुपालन में अधिक वृद्धि देखी जा रही है। 94 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया की श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। युवाओं में पलायन की दर में कमी आयी है क्योंकि अब जल संकट का समाधान होने से वह अपने गांव में ही रहकर जीवकापार्जन करने के इच्छुक हैं। महिलायें छोटे–छोटे व्यवसाय के प्रति उन्मुख हो रही हैं। युवाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि एवं स्वावलंबन की भावना आयी है। युवाओं द्वारा रोजगार के उपलब्ध नवीन विकल्पों का प्रयोग किया जा रहा है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में निर्धारित लक्ष्य का टीम सर्वे एवं अध्ययन करने से यह तथ्य प्राप्त होता है कि राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित परियोजना ''जल जीवन मिशन'' का उद्देश्य ''हर घर नल–हर घर जल'' जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, उसकी प्राप्ति की पुष्टि ग्राम पंचायत करगवाँ, विकास खंड गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर का टीम सर्वेक्षण एवं अध्ययन के पश्चात प्राप्त आंकड़ों द्वारा होता है। सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य करते हुए ग्रामीण जीवन में समग्र परिवर्तन को बल दे रही है। वर्णित योजना ने स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक व्यवहार इत्यादि क्षेत्रों में उदाहरणीय योगदान करके लोगों के जीवन स्तर को बेहतर किया है। करगवाँ ग्राम पंचायत की जनता वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखती है एवं अपने जीवन में समग्र परिवर्तन को महसूस कर रही है।

ग्राम टिकुर, ग्राम पंचायत लिंगा, विकास खण्ड गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर

ग्रामीण क्षेत्र के प्रत्येक घर को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए सरकार द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम टिकुर, ग्राम पंचायत लिंगा, विकास खण्ड गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर में निवासित आबादी

के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम टिकुर की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल

संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री शुगर सिंह से ग्राम टिकुर की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके ग्राम टिकुर की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम टिकुर में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, मूलभूत सुविधाओं, नल संयोजन आदि की जानकारी प्राप्त की गई। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री कृपादयाल से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में कुल 03 शिक्षक नियोजित हैं तथा विद्यालय में कुल नामांकन संख्या–30 है। प्राथमिक विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त है जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। ग्राम टिकुर में आंगनबाड़ी एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का अभाव है।

ग्राम टिकुर, ग्राम पंचायत लिंगा की कुल आबादी–220 है एवं कुल परिवारों की संख्या–60 तथा मतदाताओं की संख्या–121 है। ग्राम लिंगा में नल कनेक्शन स्कोप–55 है। ग्राम में निवासित प्रत्येक परिवार को नल संयोजन से आच्छादित किया जा चुका है। ग्राम टिकुर में निवासित प्रत्येक परिवार को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। लगभग 90 प्रतिशत लोगों का कृषि एवं 10 प्रतिशत लोगों का मजदूरी से जीवन निर्वाह हो रहा है। ग्राम की लगभग 350 बीघा जमीन उपजाऊ है जिसमें कृषि कार्य किया जाता है। ग्राम में बहुसंख्यक आबादी राजपूत जाति के लोगों की है उसके बाद अहिरवार जाति के लोग हैं।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम टिकुर की कुल जनसंख्या–220 है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम टिकुर की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (220/10 = 22)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 22 लोगों (11 महिला एवं 11 पुरूष) को, जो कि ग्राम टिकुर के निवासी हैं, सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर वर्णित योजना के प्रभाव का आकलन किया गया। साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में ग्राम टिकुर के हितधारकों से भी चर्चा की किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम टिकुर में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम टिकुर की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम टिकुर से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम टिकुर, ग्राम पंचायत लिंगा, वि0ख0 गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम टिकुर में निवासित लोगों के जीवन स्तर को उच्च करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से ग्राम टिकुर में निवासित लोगों के जीवन स्तर में हुए परिवर्तन का वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से वर्णन किया गया है, जो निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत इस खण्ड के विश्लेषण में कुल 11 (22 का 50 प्रतिशत) महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर महिलाओं के जीवन स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् आये बदलावों का अध्ययन किया गया है। 98 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने से उनके समग्र स्वास्थ्य में सुधार आया है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है। 95 प्रतिशत ने बताया कि नियमित एवं पर्याप्त जल की उपलब्ध्ता से ग्राम टिकुर में बने शौचालय पूर्णतः कार्यात्मक हो गये हैं जिससे स्वच्छता में वृद्धि के साथ ही महिलाओं के सम्मान को भी संरक्षण मिला है। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि दूषित जल पीने से मुक्ति मिलने के कारण जल जनित अनेक प्रकार की बीमारियों से छुटकारा मिल गया है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वर्णित योजना के लागू

होने के बाद से समय एवं धन की बचत हुयी है क्योंकि अब ना तो जल संग्रह पर अधिक समय लगता है और ना ही इलाज हेतु डॉक्टर को अनावश्यक पैसे देने की जरूरत है। 95 प्रतिशत

महिलाओं ने कहा कि वह समय की बचत होने के कारण परिवार एवं बच्चों की देखभाल अच्छे से कर रही हैं। 92 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि अब महिलाओं की भागीदारी कृषि एवं पशुपालन में बढ़ी है, इसके साथ ही सिलाई–कढ़ाई जैसी गतिविधियों द्वारा भी महिलायें धनार्जन कर रही हैं।

अतएव यह कहना समीचीन होगा कि महिलाओं के समग्र विकास में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। यह योजना महिलाओं

के स्वास्थ्य में सुधार करने के साथ ही समाज में उन्हें सम्मानजनक स्थान भी प्रदान किया है। इस प्रकार समाज में महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति उच्च हुई है और वह सम्मानजनक जीवन जी रही हैं।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम टिकुर, ग्राम पंचायत लिंगा में सरकार द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से परिचर्चा करने पर पता चला कि विद्यालय में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित

होने के पश्चात् छात्र/छात्राओं के नामांकन दर एवं उपस्थिति में वृद्धि हुई है जिससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि शिक्षा के प्रति अभिभावकों एवं बच्चों में जागरूकता आयी है। अध्ययन में

सम्मिलि 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से अभिभावकों द्वारा नियमित रूप से बच्चों को विद्यालय भेजा जा रहा है। 94 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि धन की बचत होने एवं रोजगार के बेहतर विकल्प तथा स्वास्थ्य स्तर के उच्च होने के कारण अभिभावकों द्वारा बच्चों की शिक्षा पर धन का अधिक निवेश किया जा रहा है। प्रधानाचार्य श्री कृपादयाल के अनुसार बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण उनकी बोध क्षमता में सुधार आया है, अब बच्चे किसी भी विषय को पूर्व की अपेक्षा आसानी से समझ लेते हैं। 98 प्रतिशत लोगों ने बताया कि अब बच्चों को अन्य कार्यों में कम लगाया जाता है तथा उन्हें पढ़ाई करने के लिए अधिक समय दिया जाता है। अतः स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा साक्षरता दर में सुधार आया है, गांव की जनता शिक्षा के प्रति जागरूक हुई है एवं बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक सजग है।

4.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्शों से परिचर्चा करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पश्चात् उनके स्वास्थ्य स्तर में आये बदलाव को जाना गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 100 प्रतिशत उत्तरदाता इस तथ्य से पूर्णतः सहमत हैं कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने उनके स्वास्थ्य को उन्नत करने में बेहतर योगदान दिया है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के लागू होने के बाद से जल जनित एवं पेट से संबंधित बीमारियों में कमी आई है। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि पीलिया, पेचिस, दस्त जैसी जल जलित बीमारियों में अधिक कमी देखी गई है। 97 प्रतिशत न्यादर्शों ने स्वीकार किया कि अब भोजन ठीक से पचता है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य

में सकारात्मक बदलाव आये हैं जिससे वह अधिक ऊर्जावान महसूस करते हैं। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने से उनकी कार्य क्षमता बढ़ी है। 100 प्रतिशत

उत्तरदाताओं के अनुसार बीमारियां कम होने के कारण इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि ग्राम टिकुर के निवासियों के स्वास्थ्य में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् रूपांतरकारी बदलाव आये हैं। लोगों में वर्णित योजना खुशहाली का प्रतीक बनी हुई है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

सहभागी मूल्यांकन के आधार पर अध्ययन में सम्मिलित इकाइयों से योजना लागू होने के पश्चात् सामाजिक व्यवहार में आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा करने पर पता चला कि पूर्व में सभी लोगों तक स्वच्छ पेयजल की पहुंच नहीं थी, केवल कुछ समृद्ध एवं उच्च जाति के लोगों

तक ही स्वच्छ पेयजल की पहुंच सुलभ थी क्योंकि स्वच्छ पेयजल पर होने वाले खर्च का वहन कर पाना निम्न जाति एवं आय वर्ग के लोगों के सामर्थ्य से बाहर था। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि अब प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की नियमित रूप से आपूर्ति की जा रही है।

98 प्रतिशत लोगों ने बताया कि जब से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित हुई है, तब से यह ग्राम टिकुर में सामाजिक एकता का प्रतीक बनी हुई है क्योंकि जल संकट के कारण होने वाले भेदभाव एवं झगड़ों में कमी आयी है। 94 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार वर्णित योजना सामाजिक गतिशीलता का प्रतीक बनी हुई है। 97 प्रतिशत ने बताया कि योजना ने रहन–सहन के स्तर में सुधार करके लोगों की सोच में आधुनिक मूल्यों का समावेश किया है। 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के लागू होने के बाद से शादी–विवाह के मामले में लड़के एवं लड़कियों की पसंद को प्राथमिकता दी जा रही है, दहेज की समस्या में कमी आयी है। बाल विवाह के दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता आयी है। अवएव यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा व्यापक स्तर पर सामाजिक बदलावों को प्रोत्साहन मिला है, सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है और लोगों में सामाजिक एकता स्थापित हुई है।

4.5 रोजगार के अवसर

ग्राम टिकुर की अधिकांश (लगभग 90 प्रतिशत) आबादी कृषि कार्यों में संलग्न है। शेष (लगभग 10 प्रतिशत) दिहाड़ी–मजदूरी से अपनी जीविका चलाती है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आने से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आने के कारण स्व–रोजगार पर अधिक पूंजी निवेश किया जा रहा है। युवाओं में जल संकट के समाधान से अपने गांव के प्रति रूचि बढ़ी है और वह गांव में ही रहकर स्व–रोजगार के माध्यम से जीवकोपार्जन करना चाहते हैं। 91 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि वह अब गांव में ही मूलभूत सुविधाओं के उपलब्ध हो जाने के कारण अपने गांव में ही रहकर छोटे–मोटे रोजगार करके अपनी जीविका चलायेंगे। महिलाओं के समय में बचत होने से उनकी भी भागीदारी कृषि एवं

पशुपालन में बढ़ी है जिससे वह दैनिक खर्चों को चलाने में सक्षम हुई है। 90 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि वह मुर्गी पालन, मत्स्य पालन एवं सब्जी उत्पादन के प्रति अधिक इच्छुक हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि महिलाओं की भागीदारी श्रम बल में

बढ़ी है। 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि युवाओं में पलायन की दर कम हुई है ।

उपर्युक्त आयामों के संबंध में न्यादर्शों एवं हितधारकों से प्राप्त आंकड़ों के समग्र विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन में ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत

संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा कृत कार्य के प्रति लोगों में संतुष्टि का भाव दृष्टिगोचर हो रहा है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि वर्णित योजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम टिकुर में निवासित लोगों के सर्वांगीण विकास को पोषित किया है। यह योजना लोगों की खुशहाली का प्रतीक बनी हुई है।

ग्राम पंचायत अतरा, विकास खण्ड गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर

ग्रामीण क्षेत्र के प्रत्येक घर को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने मंशा से सरकार द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम पंचायत अतरा, विकास खण्ड गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर में निवासित आबादी के जीवन स्तर

पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम पंचायत अतरा की कुल जनसंख्या, ग्राम पंचायत में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय,

आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री खेमचन्द्र से ग्राम पंचायत अतरा की समग्रता के संदर्भ में बात की गयी। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके अतरा ग्राम पंचायत

की मूलभूत समस्याओं के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके अतिरिक्त ग्राम अतरा में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के

नामांकन, ड्राप आउट की दर, मूलभूत सुविधाओं, नल संयोजन आदि की जानकारी प्राप्त की गई। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री विजय सिंह परिहार से प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यालय में कुल 03 शिक्षक नियोजित हैं तथा विद्यालय में कुल नामांकन संख्या–65 है। पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य के अनुसार विद्यालय में कुल 01 शिक्षक नियोजित है तथा विद्यालय में कुल विद्यार्थियों की नामांकन संख्या–55 है। उक्त दोनों विद्यालय नल संयोजन से पूर्णतः संतृप्त है जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। ग्राम पंचायत अतरा में एक आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित है जिसकी सहायिका श्रीमती केशकली से चर्चा में पता चला कि बच्चों एवं माताओं का स्वास्थ्य अच्छा है। ग्राम पंचायत में कोई–भी स्वास्थ्य केन्द्र उपलब्ध नहीं है।

ग्राम पंचायत अतरा, की कुल आबादी–3200 है एवं कुल परिवारों की संख्या–400 तथा मतदाताओं की संख्या–2100 है। ग्राम पंचायत अतरा में नल कनेक्शन स्कोप–467 है जिसके सापेक्ष केवल 413 नल कनेक्शन प्रदान किये गये हैं। ग्राम में केवल वही परिवार नल संयोजन से वंचित हैं जो जीविका हेतु शहरों में पलायन कर गये हैं अथवा वह नल कनेक्शन लेने के इच्छुक नहीं हैं क्योंकि उनके पास पहले से ही पर्याप्त एवं स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता है। ग्राम पंचायत अतरा में निवासित नल संयोजन से संतृप्त परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। ग्राम में लगभग 1800 बीघा जमीन है जिसमें लगभग 90 प्रतिशत उपजाऊ एवं 10 प्रतिशत पठारी है। ग्राम पंचायत के लगभग 90 प्रतिशत लोग खेती–बाड़ी एवं 10 प्रतिशत लोग मजदूरी से जीविका प्राप्त करते हैं।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

1.0 निदर्श निर्धारण

ग्राम पंचायत अतरा की कुल जनसंख्या–3200 है। निदर्श निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। ग्राम पंचायत अतरा की कुल जनसंख्या के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है (3200/10 = 320)। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 320 लोगों (महिला–160 एवं पुरूष–160) को, जो कि ग्राम पंचायत अतरा के निवासी हैं, सम्मिलित करके उनके जीवन स्तर पर वर्णित योजना के प्रभाव का आकलन किया गया। साथ ही योजना के प्रभाव के संदर्भ में ग्राम पंचायत अतरा के हितधारकों से भी चर्चा की किया गया है।

2.0 समाविष्ट के मानदण्ड

ग्राम पंचायत अतरा में सरकार द्वारा संचालित योजना ''हर घर नल–हर घर जल'' के प्रभाव मूल्यांकन हेतु ग्राम पंचायत अतरा की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही ग्राम के हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें वयस्क स्त्री, पुरूष और वृद्ध सम्मिलित हैं।

3.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो ग्राम पंचायत अतरा से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

4.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम पंचायत अतरा, वि0ख0 गोहाण्ड, जनपद हमीरपुर का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना ने ग्राम पंचायत अतरा में निवासित लोगों के जीवन स्तर को उच्च करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। प्रस्तुत अध्ययन में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से ग्राम पंचायत अतरा में निवासित लोगों के जीवन स्तर में हुए परिवर्तन का वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से वर्णन किया गया है जो निम्नलिखित है–

4.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

इस खण्ड के अंतर्गत महिलाओं के जीवन स्तर पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालन के पश्चात् आये बदलावों का अध्ययन किया गया है। कुल 160 (कुल न्यदार्श का 50 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं का कार्य बोझ कम हुआ है। 98 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने कहा कि वर्णित योजना के संचालन से जल जनित बीमारियों में कमी आयी है जिससे उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ है। 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि कृषि एवं पशुपालन में उनकी भागीदारी बढ़ी है। 97 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने कहा कि समय एवं धन की बचत के कारण बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दे रही हैं, जिससे उन्हें अच्छी शिक्षा प्राप्त हो रही है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से स्वच्छता में सुधार आया है जिससे कई प्रकार की बीमारियां कम हुई हैं। इस प्रकार से यह कहना समीचीन होगा कि वर्णित योजना ने

महिलाओं को सशक्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन् किया है। इसके साथ ही महिलाओं

के स्वास्थ्य स्तर को उन्नत करके उन्हें गरिमापूर्ण जीवन प्रदान किया है। परिवार एवं समाज में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ है।

4.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत अतरा के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता वर्णित योजना के कारण आयी है। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि योजना के संचालन के पश्चात् बच्चों को नियमित रूप से तैयार करके विद्यालय

भेजा जा रहा है। 95 प्रतिशत अध्ययन में सम्मिलित इकाइयों ने कहा कि बच्चों को अध्ययन हेतु प्रेरित किया जा रहा है ताकि वह अधिक अच्छे से पढ़ाई कर सकें। अतरा ग्राम पंचायत में

संचालित प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त कर दिया गया है जिसके कारण बच्चों के नामांकन दर में वृद्धि हुई हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य के अनुसार बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आयी है जिससे उनका स्वास्थ्य अच्छा हुआ, परिणामस्वरूप वह नियमित रूप से विद्यालय आ रहे हैं और अच्छे से पढ़ाई भी कर रहे हैं। 93 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने स्वीकार किया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से बच्चों की शिक्षा पर धन का अधिक निवेश किया जा रहा

है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि बच्चों एवं अभिभावकों में शिक्षा के प्रति चेतना आयी है और वह शिक्षा के महत्त्व को समझ भी रहे हैं। गांव में कोई भी बच्चा स्कूल समय में घूमते हुये नहीं मिला जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं।

4.3 ''हर घर नल–हर घर जल'' का स्वास्थ्य पर प्रभाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण अतरा ग्राम पंचायत के लोगों के स्वास्थ्य में सुधार दृष्टिगोचर हुआ है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने

बताया कि वर्णित योजना के संचालन के पश्चात् जल जनित बीमारियों में बहुत कमी आयी है

जिससे उनका शारीरिक एवं मानसिक स्तर सुदृढ़ हुआ है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पीलिया, पेचिस, दस्त आदि बीमारियों कमी आयी है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से भोजन करने पर ठीक से पच जाता है। 93 प्रतिशत अध्ययन में सम्मिलित इकाइयों के अनुसार महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य में अधिक सुधार देखा गया है। 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि स्वास्थ्य स्तर उन्नत होने से उनकी कार्य क्षमता में सुधार आया है। 94 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि पूर्व में दूषित जल पीने के कारण बच्चों के पेट में कीड़े पड़ जाते थे जिसके कारण उन्हें अधिक पीड़ा होती थी, वर्णित योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण अब उक्त समस्या से मुक्ति बच्चों को मिल गई है जिससे उनके स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार आया है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उनकी शिक्षा एवं शारीरिक विकास पर देखा जा सकता है। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सभी आयु वर्ग के लोगों के स्वास्थ्य में सुधार किया गया है जिससे उनकी कार्य क्षमता एवं शारीरिक विकास में वृद्धि हुई है। यह योजना अतरा ग्राम पंचायत में खुशहाली का प्रतीक बनी हुई है।

4.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित इकाइयों से योजना लागू होने के पश्चात् सामाजिक व्यवहार में आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा करने पर पता चला कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से पूर्व ग्राम पंचायत अतरा के केवल समृद्ध परिवारों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता थी, निम्न आय वर्ग के लोगों द्वारा कुओं एवं तालाबों में उपलब्ध जल का प्रयोग किया जाता था, जो कि दूषित होता था। अध्ययन की 100 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि वर्णित

योजना के संचालन के बाद से प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है जिससे उन्हें स्वच्छ पेयजल प्राप्त हो रहा है। 98 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि अब अतरा

ग्राम पंचायत में यह योजना सामाजिक एकता का प्रतीक बनी हुई है, गांव में सहकारिता एवं समरसता का भाव योजना द्वारा विकसित किया गया है। अब जल संकट के कारण होने वाली लड़ाइयों का भी शमन हुआ है।

शादी–विवाह में आये परिवर्तनों के संदर्भ में उत्तरदाताओं से परिचर्चा करने पर 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि गांव में अब लड़की पक्ष वाले रिश्ता करना अधिक पसंद कर रहे हैं। 85 प्रतिशत ने बताया कि बेमेल विवाह में कमी आयी है। 89 प्रतिशत के अनुसार खर्च में अधिक बढ़ोत्तरी हुई है क्योंकि इलाज पर खर्च में कमी आयी है जिसका प्रयोग वह अन्य कार्यों में कर रहे हैं। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा लोगों के रहन–सहन के स्तर में सुधार आया है। सामाजिक गतिशीलता के कारण लोगों की सोच में आधुनिक मूल्यों का समावेश हुआ है।

4.5 रोजगार के अवसर

ग्राम पंचायत अतरा की अधिकांश आबादी कृषि एवं संबंधित गतिविधियों से जीविका चलाती है। कुछ लोग दिहाड़ी–मजदूरी भी करते हैं। ग्राम पंचायत के कुछ लोग जीवकोपार्जन के कारण बाहर शहरों में भी गये हुये हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा युवाओं का रूझान अपने गांव की ओर बढ़ा है जिसके कारण वह गांव में ही रहकर छोटे–मोटे काम करके अपनी आजीविका चलाना पसंद कर रहे हैं। अध्ययन में सम्मिलित 90 प्रतिशत युवाओं ने कहा कि वह गांव में ही रहकर स्व–रोजगार करके अपनी जीविका चलाना चाहते हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के बाद से युवाओं एवं महिलाओं की भागीदारी खेती–किसानी में बढ़ी है। स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण युवाओं के स्वास्थ्य में सुधार आने से उनके कार्य प्रदर्शन में सुधार आया है। 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवाओं के पलायन में कमी आयी है जिसके कारण युवा लोग गांव में ही रहकर रोजगार के उपलब्ध विकल्पों का प्रयोग कर रहे हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा युवाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है,

उनका उत्साहवर्धन हुआ है क्योंकि जल संकट के समाधान एवं स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता

से उनके स्वास्थ्य में सुधार आया है जिसका सकारात्मक प्रभाव उनके शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर देखा जा सकता है।

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना जिस ध्येय के अनुसार कार्य कर रही है, उसके प्राप्ति की पुष्टि प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत ग्राम पंचायत अतरा के सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर प्राप्त आंकड़े करते हैं। सरकार द्वारा संचालित एवं वित्तीय रूप से पोषित वर्णित परियोजना के अंतर्गत कृत कार्य अतरा ग्राम पंचायत की खुशहाली और समृद्धि

को उन्नत कर रही है। अतरा ग्राम पंचायत के लोगों में योजना के प्रति संतुष्टि का भाव दृष्टिगोचर हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास को पोषित यह योजना अतरा ग्राम पंचायत के विकास में उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय योगदान दे रही है।